ঢোনক

(করিতা সংগ্রহ)

রৃষেশ চন্দ্র নান



ঢোলক

(কবিতা সংগ্রহ)

- বৃষেশ চন্দ্র লাল

ढोलक

(मैथिली कविता संग्रह)



वृषेश चन्द्र लाल

प्रकाशक :

सुदामा प्रकाशन

जनकपुरधाम

ढोलक

(मैथिली कविता संग्रह)

वृषेशचन्द्र लाल

प्रकाशक : **सुदामा प्रकाशन**
जनकपुरधाम-२, किशोरीनगर
९८६९७३०७६४

संस्करण : पहिल २०७८ माघ १०००
मूल्य : २०० टका
आवरण : मनोज कुमार यादव
मुद्रण : युनियन अफसेट प्रेस, जनकपुरधाम

प्रकाशकीय

ठीके साहित्य ओहि युगक जिवित दस्तावेज होइत अछि जकर ओ प्रतिनिधित्व करैत अछि । कवि वृषेशचन्द्र लालक 'ढोलक' वर्तमान युगक इमानदार अभिव्यक्ति-लेख अछि । मैथिलीक साहित्यक श्रीवर्धनमे कवि वृषेशचन्द्र लालक ई योगदान निश्चिते महत्वपूर्ण हएत ।

प्रस्तुत पोथीक प्रकाशनक वास्तविक श्रेयक अधिकारी जनकपुरधामक 'यूनियन अफसेट प्रेस परिवार' छथि । चिरंजीवी प्रमोद चौधरी आ चौधरी परिवारप्रति एहिलेल सुदामा प्रकाशन हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करैत अछि । हिनका सभक अमूल्य सहयोग नहि भेटैत त प्रायः पोथीक प्रकाशन किछु वर्षधरि सम्भव नहि भ' सकैत ।

पोथीक मादेँ आदरणीय डा. राजेन्द्र 'विमल' तथा समादरणीय परमेश्वर कापड़िजीक भूमिका-उद्‌गारमे बहुत किछु अछि । एहि अभिदानलेल प्रकाशन हृदयसँ आभार प्रकट करैत अछि ।

सादर,

विजया लाल
सुदामा प्रकाशन
जनकपुरधाम
१ माघ, २०७८



कवि लालक "ढोलक" पर बजैत सदाबहार ताल

डा. राजेन्द्र विमल
जनकपुरधाम
०९-०३-०७८

वर्तमान युगक करेजक प्रत्येक स्पन्दनकेँ शब्द देवाक हेतु उताहुल आ समर्थ सशक्त समकालीन कवि बृषेश चन्द्र लाल, अपन मैथिली कवितासभमे नेपालीय मिथिलाभूमिक सङ्घर्ष, सफलता-असफलता, वेदना आ उल्लास, श्लथता आ ऊर्जस्विताक सूक्ष्मातिसूक्ष्म चित्र जाहि नव-नव विम्व आ प्रतीकक माध्यमे प्रस्तुत करैत छथि से हिनकर पृथक पहिचान स्थापित करैत अछि ।

जीवनक शक्ति आ सम्भावनाक आलोड़नमे पालित भेल अछि सत्यक मोती । कवितासभमे अभिव्यञ्जित आत्मनिष्ठाक ज्वलित संचेतना, प्रतिफलन थिक आत्मबोधक ओहि मंगल-क्षणक जे आत्मद्वन्द्वक समुद्र मंथन हेतु प्रेरित कएने छल । कविक सौन्दर्य-बोध कल्पना-कुहरमे कुण्ठित सत्यकेँ पूर्ण सत्य मानवासँ अस्वीकार कए दैत अछि आ जीवनक नग्न, उबडखाबड, किन्तु विज्ञानसम्मत जमीनपर ठाढ भए मात्र कवि जीवन-मूल्य आ युग-मूल्यक संधान करैत छथि । एहन अवस्थामे सौन्दर्यक आयाम जे विराटता प्राप्त करैत अछि, से रोमाञ्चक थिक । सौन्दर्यके विराट आयामकेँ देखबाक, दर्शनक कारणेँ सेहो कवि अपने प्रतीक आ विम्वके नव-नवीन स्तर प्रदान करैत चलै छथि । हिनकर कविता कोनो कमनीय कामिनीक कपोलक सिन्दूरी आभा भरि नहि अछि, सौन्दर्यक संग नव सृजन, नव मूल्य-स्थापन, नव आस्था, नव हौसला, नव उत्साहक संवाहक थिक ई कविता । पीडा आ आत्मवेदना त अछि, मुदा पीडाक उच्छवास अवसादित नहि कए, पीडामुक्तिक पथ निर्माण कए पृथ्वीपर मानवीयतापूर्ण आनन्दलोक सृष्टि करबाक ऊर्जा दैत अछि । मानवकेन्द्रित दर्शन (Anthropocentric philosophy) कवि बृषेश चन्द्र लालक मूल सार बनि जाइत अछि । जीवनक विकलांग सत्यक चित्रकार नहि थिकाह कवि लाल । ई जीवनके ओकर सम्पूर्णतामे देखैत छथि आ अशिव-तत्वकेँ शिव-तत्वमे परिवर्तित करबाक मार्गचित्र सेहो दैत छथि । जीवनसँ पलायनक कविता नहि अछि 'ढोलक' (सङ्ग्रह)क कविता, जीवनानुरागक कविता अछि

जकरामे यथास्थितिवादसँ परिवर्तनदिशि छलाङ लगएबाक अमृत-रसायन छैक । जीवनक संघर्षसँ उपलब्ध अनुभूतिक सत्यक गहिंराइमे ल जाइत एहि संग्रहक कवितासभके जीवनक पंकिल विरूपता परिलक्षित होइछ, मुदा ओत्तए जे जगर-मगर करैत शाश्वत सत्यक मोती थिकै तकरा कोनो पारखीए चूनि सकैत अछि । स्वप्नाकुल स्थितिक स्वरक ठामपर समसामयिक जीवनक दुःख-सुखपूर्ण कोलाहल एहि कवितासभमे भेटैत अछि, जे अहाँकेँ झिकझोरि कए राखि द सकैत अछि । विशेषतः नेपालक समकालीन सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक परिदृश्यसँ अंकुरित, विकसित, पल्लवित आ पुष्पित भेल 'ढोलक'-क कवितामे कुण्ठाग्रस्तताक स्थानपर धरातलीय यथार्थक उद्दाम अभिव्यक्ति भेटि सकैत अछि, ठाम-ठिम ।

तएँ, संग्रहक कोनो कवितामे नैराश्यक उदास राग कत्तहु ने ध्वनित होइत अछि । जीवनक आस्थामय अनुभूतिसँ अनुप्राणित कवि लालक कविता जिजीविषाक कविता भेलाक कारणेँ ताहिमे अभिव्यक्त वैयक्तिक अन्तर्वेदना सेहो संघर्षक उत्प्रेरक बनि गेल अछि । कविक अन्तर्वेदना पंगुताक जन्म नहि दैछ, मुक्तिक हेतु श्लथ जीवनकेँ ऊर्जस्वित करैत अछि । अन्तर्वेदनासँ पंगुता नहि पुंसत्व जनमैत अछि । लक्ष्यपथमे बहैत अश्रु, रक्त, स्वेद प्राणवत् गतिशीलताक परिचय बनि जाइत अछि । छल, स्वार्थ, हिंसा, विद्रूपता आ सौन्दर्य, शान्ति, उत्साह, उच्छलता, हौसलासभ अनुभूतिकेँ वाणी दैत कवि जीवनके सम्पूर्णतामे स्वीकार करैत छथि, मुदा आधुनिक विज्ञान आ तकनीकक एहि युगमे कवि बृषेश चन्द्र लाल धरातलीय यथार्थक वैज्ञानिक परीक्षण करै छथि आ उपलब्ध सत्यकेँ विज्ञान-सम्मत विम्वक माध्यमे प्रस्तुत करैत छथि ।

समाजक जडीभूत चेतनाकेँ झिकझोडैत कवि कहै छथि -

'जागथु सभ गोसाईं,
घर-घरक पीढ़ी
बरहम बाबा
गढ़ी ओ गहबरसभ,
उठओ माटि मिथिलाक
सहस्र हाथमे ह'रक फार नेने ....

कविक स्वतंत्र्य चेतना लौह पिंजरकेँ तोडि फुर्र द' उडि जएबाक उद्‌वोधन दैत अछि -

'बिन कटने ने छूटत बान्ह,
कतबो भुकाएब शीश आ कान्ह।'

अपन माटि-पानि आ संस्कृतिक प्रति कविक दुर्दान्त अनुराग देखू आ तकर ब्याजेँ अधिकारक हेतु सभ समाङक सङोरक संकेतपर गौर करियौ -

'चौरचन-चौरचन उगल चान
झट दए पूडी-दही आन
मडड भाङि खूब खाएब पूरी
सभ भाइ सभ आङन घूरी ......'

एक गोट बालगीतमे कागक प्रतीकक माध्यमे नेपालक वर्तमान राजनीतिकर्मीक चरित्रपर कतेक गंभीर व्यंग्य कएल गेल अछि -

'उडि-उडि अएतौक,
आँखि घुमएतौक,
ससरि कए अएतौ आगाँ
मारि लोल फेर भागि पडएतौक
एहन होइ छै कागा ......'

तहिना एहने एक गोट बालकवितामे सामन्तक प्रतीकक रूपमे मूसकेँ कोना ठाढ़ कएल गेल अछि देखियौ -

'रे बौआ मुसबा बड पेरैए !
बिन नेओतल ई मुसरी जनसभ,
पडल-पडल ढेकरैए
अन्न-पानि जँ निंघटि जाइ छै
चुप्पे ससरि टघरैए ......'

उद्‌वोधन स्वर सुनियौ -

'कखन तक पड़ल रहब,
अधिकार छोडि सूतल रहब,

प्रतिकारके एहि क्षणमे
डेरा भगैत फिरल रहब
गाउ अपन मुक्तिक
अपन राग रे ......'

अधिकारक हेतु संघर्ष करैत एहि अटल पर्वतक हृदयसँ जखन श्रृंगारक झरना झरए लगैछ त मोन-प्राण गील-गील भए जाइछ -

'नजरि अहँक चितकँ जुडा दैत अछि,
घुरा कए क्षणेँ सही,
जिनगी जगा दैत अछि,
धसल डीहपर लौका कए फेर स्वप्नमहल
सूखल कोनमे कनोजर लगा दैत अछि .....'

'झुनुक झुन झुनझुन पायल बाजए,
पिया संग नेह जगाबए रे ....'

'गोरीक केश जेना साओन लहराइत होय
माथक ठोपसँ जेना सूर्य बहराइत होय
सभसँ पिजाओल छैन्हि हिनकर नयनमा
गोरकी नजरि मोर हरि लेल परनमा .....'

सामाजिक न्यायक हेतु पददलित वर्गक अगुआक रूपमे छाती खोलि ठाढ भेल कवि दलितक कथा लिखनिहार, साहित्यकार, कलाकार, राजनेताक हृदयमे जखन इमान्दार संवेदनाक अभाव देखैत छथि त चिकरि उठैत छथि -

'मुसहरकँ मुसहरे राखह,
देखह खूब निहारि
लिखह, फोटो खिचह,
माङिचाङि कए भीखो दहक
आ करह जमओरा झारि ....'

हिनक ढोलक सेहो सर्वहारा जीवनक प्रतीक भए कवितामे प्रकट भेल अछि -

'ढोलक !
लटकल छैक
टाङल छैक
टाटक कोन्हमे
ठोकल खुट्टीसँ
बान्हल छैक .....'

कवि लाल जखन दार्शनिक मुद्रामे देखबामे अबै छथि त हुनक कविता गम्भीर तत्वज्ञानक अतल गहिराइमे ल जाइत अछि -

'शून्ये त सत्व अछि
शून्यमे अस्तित्व अछि
अस्तित्वकेर आधार शून्य
शून्य सार-तत्व अछि .....'

कवि बृषेश चन्द्र लालक काव्य-सृष्टिक ई उल्लेख्य वैशिष्ठ्य थिक जे एकर रचना कोनो राजनेताद्वारा कारागारक अवकाश-कालमे नहि भेल अछि, अपितु नेपालमे अनवरत् चलि रहल विभेद अन्तक युद्धक मैदानमे युद्धरत् कविहृदय सेनानी स्रष्टाद्वारा भेल अछि, लगैछ जेना श्रीकृष्ण कुरूक्षेत्रक बीचमे ठाढ़ भ गीता सुना रहल होथि ।





कत्त'स' करू शुरू !

परमेश्वर कापड़ि
जनकपुरधाम

बहुत अखियासिक' देखने, खूब बिहियाक' परेखने, डिठिया-ठिकियाक' निङहारने, बूझ'-सूझमे अबैछ जे वृषेशचन्द्र लालक समस्त रचनागत संसारक आयाम बहुत विस्तृत अछि आ एकर परिधि, परिदृश्य बहुत व्यापक अछि । ओहि परिदृश्यगत व्याप्तिके निमने-नाहित अवगाहने, नीकस' अध्ययन कएने, ठीकस' मूल्यांकन कएने, देख'मे अबैछ जे ई कवि सृजनात्मक मूल्यवोधक विशेष आग्रही आ लोकनिष्ठाप्रति सेहो किछु बेसिए संवेदनशील छथि । जीवन जगत्क अवलोकन ई बहुत सूक्ष्मताक संग कएने छथि सएह नहि, हिनक अभिव्यक्ति आवाज-दवावके रूपमे, रूपान्तरणकारी आन्दोलन आ परिवर्त्तनक पक्षमे, सोझे डिठे लोक-समाजसङे, अटल-डटल, ठठल ठाढ़ छन्हि ।

आइकाल्हि राजनीतिक आवाज आ दवाव अधिकतर झौहरा हल्ला करैत, देखाइ दैत अछि । ओतहि हिनक रचनागत आवाज आ सृजनात्मक दवाव नव संरचनावादी, लोकसंवेगित आ रूपान्तरणक पक्षधर रहल देखाइ दैत अछि । वैदिक उद्घोष आ पौराणिक उपदेश रहल अछि– 'ब्रह्म सत्य, जगत् मिथ्या' ! आजुक बदलल समय-सन्दर्भमे, वैश्विक संचारी युगक उपलाएल परिवेश आ उखला करैत परिप्रेक्ष्यमे, वृषेशीय हुमचल आवाज आ तबघल हुंकार रहल अछि– ' जगत् सत्य, लोक-ब्रह्म !' हिनक अप्पन दृष्टि-दर्शनमे लोकशक्ति शास्वत अछि, इएह परम आ चरम' अछि । एहनमे, एहि लोक निष्ठाक आवेगी कवि, आन्दोलन आ परिवर्त्तनक ऐ नव राजनीतिक संस्कृतिमे, लोक-समाजक सब अवयव, सक्रिय तत्व आ जम्मे उपादानक समेकित क', समष्टिगतरूपमे संवेगित भ', फेरू कहब, रूपान्तरणक लक्ष्य आ पक्षमे, हरहोर करैत, सङोर करैत, जाग'के लेल, नव ताव-तेवरस', आह्वान करैत, देखल जाइछ । आन्दोलनी अभियानीए द्वारा कएल गेल नव संरचनावादी रूपान्तरकारी आन्दोलन महत्वपूर्ण होइत अछि । दूरगामी दीर्घकामी युग-पुस्ता आ कालखण्डीय परिवर्त्तनआग्रही, समग्र क्रान्ति आ देहे लागल, मने माफिकक नवयुगीन संरचनागत बदलावक लेल, नवजीवन मूल्य-मान्यताके लेल, बदलल परिप्रेक्ष्य आ नवयुगीन जीवनपद्धति ओ दृष्टिदर्शनके लेल, सबके सबस',

सबभरस', माने आन्दोलनी-अभियानीक संगहि घर-परिवार, चुल्हि-चिनवार, खेत-खढ़ियान, बाट-घाट, दिन-राति, गहवर-गोंसाइंधरि जागि, लागि-भीर हुमरैत-हुड़कैत, मेचैत-दरमेसैत, तबधल-आहुताएल, लहकैत-धधकैत आगू अगुआएल, सङोर बान्हि, बिर्ड़ो-बिहाड़ि बनि, ढेहु-हिलकोर मारैत, आगू बढ़ए, रस्ता नापि चरमपर चढ़ि, सफल हुअए, तब सम्पूर्ण क्रान्ति आ समग्र आन्दोलन सफल हएत । एहि उद्वेगस' हिनक ई नव गीत गोहारि, नव भाव भास ल'क', अहूताएल अछि–

– जागथु सभ गोसाईं
घर-घरक पीढ़ी
बरहमबाबा
गढ़ी ओ गहबरसभ
उठओ माटि मिथिलाक
सहस्त्र हाथ हरक फार नेने
चढ़थुन्ह 'शक्ति'
निकलि चिनवारसँ
अजस्त्र आगि संग भवानीसभ
जरओ सभ जमल
जड़्वृत शुम्भ-निशुम्भ
गलओ दृष्टि–शूलसँ
महिषासुर !
नमो, दुर्गे दुर्गा उद्धारिणी
शक्ति दिऔक
जन-जनमे !!

नहियो-नहियोक' बहुत किछु खास आ लौकिक मौलिक एहि लोककविमे देखएमे अबैछ । 'शुभे हे शुभे' शीर्षक गीत हमरा जनिते ई एहन नव 'लोक-सामवेद गान' अछि जाहिमे आजुक नव परिवेश, परिप्रेक्ष्य आ बदलैत परिस्थितिमे, नव संरचनावादी, रूपान्तरणकारी, प्रयोगधर्मी, नेत-बरक्कैतबला लोक-स्वस्तिक शुभमंगल गान हिनकर आत्मिक तौंत आ नैष्ठिक दरेगके उजागर करैछ–

प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता ।

– मण्डुकोपनिषद् (१/१/१)

श्रुतिसबमे कहल गेल अछि जे ब्रह्मा प्रथम जात छथि आ एहि प्रथम जात ब्रह्माक उत्पति आद्याशक्ति भगवतीस’ भेल अछि । एकर प्रमाण ऋग्वेदक देवीसूक्तमे एना अछि–

अहं सुवे पितरस्य ।

– ऋग्वेद (१०/१२१/५)

महाशक्ति जगदम्वा कहैत छथिन्ह– रूद्र आ ब्रह्माजीयोके सृष्टि हमरेस’ भेल अछि ! एहि जगत्क पितोके हमहीं प्रसव कएने छी । 'अहं सुवे' ! हम हिनको प्रसव कतृ छी ! एहि महामन्त्रमेके अहं शब्द हेराइत ढेराइत, अलोपित भ’ 'सुवे' मात्र बंचि गेलै । अपनासबके लोक-समाजक पाइन-बाइनमे, ऐ सुवेके दू अर्थ भाव देखएमे अबैछ । एक भेल सुवे माने सुहवे । दोसर भेल– शुभे ! सर्वमंगल शुभ भाव ! अपना सबहक परम पावन, मांगलिक अनुष्ठानिक चुमाओनक मन्त्र - शुभे हे शुभे ! होइत-हवाइत खियाइत-मेटाइत ई ननटुनमा भ’ रूढ़िगत जे भ’ गेल छल, तेकरा ई कहबैका कवि दरेगी भावस’ नव सन्दर्भ आ परिप्रेक्ष्यमे, महाभगवतीके आसि आर्शीवादी भावके नव शब्द भाव-भास देने, बड पुनित हितलग काज कएने देखल गेल अछि । एकर काव्यात्मक गुण गौरवके सौरव आनो आन भइए सकैछ, तैपर हमरा एतए विशेष किछु नहि कहबाक अछि । तैयो कहब जे सनातनी मिथिला-मानस शुभ-शान्तिक बेकल अनुष्ठानिक आग्रही अदौएस’ रहल अछि । वैदिक स्वस्ति-वाचन, साम-गान बहुत ध्यानस’ पण्डित पुरहित मुहे करबैत रहलाह अछि, मुदा अपनासबके घर-अङनाक दाइ-माइ, बुढ़िया-पुरैनिञा पकली गीतहारि लोकनि, मांगलिक संस्कारिक सबहे अनुष्ठानमे ऐ लोक सामगानके बहुत मेहिया पेघराक’, गबैत आबि रहलीह अछि– शुभे हो शुभे ... ! ऐ लोके लागि-भागिके, शुभमंगल गानके, ई कवि एना, ऐ अमनिञा शब्द-भावमे गाबि, बहुत बढ़का उपकार कएने बुझाइत छथि–

– शुभे हो शुभे !
शुभ-शुभ रहे अंगनमा !! शुभे हो शुभे !!!
रहे शक्तिक चरणमा ! शुभे हो शुभे !!
स्वकेर मान रहे
सभतरि सम्मान रहे
गौरव आ शान रहे

शुभे हो शुभे !
शुभ-शुभ रहे अंगनमा !! शुभे हो शुभे !!!
रहे शक्तिक चरणमा ! शुभे हो शुभे !!
स्वस्थ अपन जान रहे
सेवापर प्राण रहे
सद्गुणके खान रहे
शुभे हो शुभे !
शुभ-शुभ रहे अंगनमा !! शुभे हो शुभे !!!
रहे शक्तिक चरणमा ! शुभे हो शुभे !!
सुखक मचान रहे
सभ घरमे धान रहे
सुयश सुदान रहे
शुभे हो शुभे !
शुभ-शुभ रहे अंगनमा !! शुभे हो शुभे !!!
रहे शक्तिक चरणमा ! शुभे हो शुभे !!
सोना सन्तान रहे
समृद्ध समांग रहे
शुभ-शुभके गान रहे
शुभे हो शुभे !
शुभ-शुभ रहे अंगनमा !! शुभे हो शुभे !!!
रहे शक्तिक चरणमा ! शुभे हो शुभे !!

आनलोक जकां लागि-भिरक', बतन्ना बान्हिक', हरसठे अपन परिचय आ प्रसिद्धिक लेल, ई कवि रचना नइ क', चासे-मासे गोट-आधे रचना करैत आएल छथि । तैयो जे जतबे मैथिलीमे रचना करैत छथि, ओकर मान आ स्थानक ऐतिहासिकता अपना ठामपर महत्वपूर्ण आ उल्लेख्य अछि । कहियास' ई रचनागत संसारमे पदार्पण कएलन्हि, ऐ ठाम हम किटुआ कहि नहि सकैत छी, मुदा स्कूलमे हिनक खुटचालिबला व्यंग्य रचना बहुते सुनने छी– 'लिअ' हाथमे खुरपी । पहिने परती कोरू यौ । कविजी कविता छोड़ू यौ !' कलम विचार आध्यात्म आ खुरपी श्रम, उत्पादक प्रतीक अइ आ श्रम आध्यात्म सरस गान ई स्कूलेमे नइ, अपन राजनीतिक जेलो जीवनमे बहुते रचनासब कएनहि छथि, से थोड़-बहुत बूझल अछि । मुदा डिस्को-डांसक ड्रम/ढमबजाबला पौपगीतक शुरूआत,

एत्तुका मैथिलीमे प्राय इहे कवि कएने छथि–कत्त' स' 'शुरू हम करू !' शीर्षक गीतस' । ई गीत पछाति मैथिलीक प्रथम टेलीफिल्म 'दहेज'मे आएल अछि–

– कत्त' स' शुरू ह'म करू यौ गुरू !
'ए' स' करू, की 'बी' स' करू की
'सी' स' करू ओ गुरू !
घूस जे खाइए, मौज करैए
और चढ़ए कार ।
बूड़िबक सब कुर्सीपर बैसल
बुधिबला लाचार !

पछिमी राग-रंङमे उमकैत-फुदकैत लाढ़ो-लढ़का वय-वर्गक लेल रचित एहि गीतमे, राजनीतिक दूलत्ती लथार एत्त' ई हँसिते भुमिते ठीकस' ठिकियाक', हनने छथि । एहि गीत रचनाक पाछू एगो बड मार्मिक, दरेगी आ ध्यातव्य कथा/घटना अछि ।

एकदिन एहिना बाहरस' मन्हुआएल, बिधुआएल, लुलुआएल आबि, हिनक अपने ननु ननकिरबा हिनका अपनेस' पूछि बैसलन्हि–

– बाबू, अपना मैथिलीमे ई एहन पौपगीत सब नै छै ?

– छै की । कैला नै छै , छै ।

जोशपर, गौरवे पतिराखन तोक-भरोस देब' ला' त' ई कहि देलथिन्ह, मुदा वास्तवमे इहो एहन गीत सुनने देखने नै रहथि । आनि गरानिपर अपनेस' ई सुन्नरसन गीत लिखलन्हि । लवरा-लहरचटका, कुदका-गैरघुम्मा, चिकर-भोकर, भौहरा कर'बला धुनपर ई आवाज-दवाव दैत, कुप्रवृति कुसंस्कारके ठोकरियबैत, मजाक उरबैत, ई गीत बड़ ऐतिहासिक आ प्रसिद्ध भेल अछि ।

शिशु जतबे लौजा, खिच्च्चा लरगुज, मोलायम होइछ, शिशुगीतो ओतबे नेउनियाह राग-भावके, कल्पनास' भरल-पूरल होइछ । ईहो बालगीतकार अपन सब चेतना, प्रज्ञा आ पकठोस ज्ञान-अनुभवके बिसरि, बालमन आ बालपनमे अपनाके रूपान्तरित कइएक', बालवोध बनि, बालभाषामे, बहुते महत्वपूर्ण आ मीठ-मीठ बालस्वीकृत गीतसब लिखलन्हि अछि । मैथिली बालगीत संसारके समृद्ध करैत, बाल रचनाधर्मिताके अहगरस' भरल-पूरल आ मठोमाठ बनबैत, खेल-गीतानन्दस' सराबोर करैत, ई बहुत सचेष्ट आ नव पुस्ता प्रतिवद्ध देखल जाइत छथि–

आ आ रे खंजन चिड़ैया, बौआकेँ झुला

पेखरिके भीड़पर हिड़ला लगा ।

चाउर देबौ, खुद्दी देबौ, देबौ दालिक कुन्नी

चींची-चींची गाबि-गाबि सुता दही तौँ मुन्नी

मीठ-मीठ सपनासँ बौआकेँ भुला

धीरे-धीरे सा रे ग म मुरली बजा

आ आ रे खंजन चिड़ैया, बौआकेँ झुला

पेखरिके भीड़पर हिड़ला लगा ।

युगचेता, लोकद्रष्टा आ कला-संस्कृति आग्रही वृषेशचन्द्रलाल एहन बालकवि छथि जे अपन बालसंततिके, नवका पीढ़ी पुस्ताके पंचतन्त्रीय वोध-ज्ञान आ नीति द', सचेष्ट आ नीर-क्षीर विवेकी बनबए चाहैत छथि । आइके युगमे सोझिया सुधुवा ठकबा प्रवृतिक लोकस' बड़े ठकाइछ, डेग-डेगपर धोखा खाइछ । एतेधरि जे अपने गाम-समाजमे नेता, चुनावी लोभ-लाभके चटना-चकलेटी प्रलोभन द', रङ-विरङके सपना देखा, सोन्हगर भाग्य-भविष्यके मान चढ़ाक', विकास-निर्माणके लहरचटका झपस्सा द'क', नैसर्गिक हक-अधिकारस' वंचित कर'बला ठकबा प्रवृति आदिस' बच' आ सर्तक करएबाक हेतु, जीवनमे नहि कहियो ठकाय, लुलुआयलेल, नेनहिस' ओकरामे वुद्धि-विवेक सम्मत युगचेतनाबला प्रज्ञा, असल नागरिक गुण देबाक हेतु, ई कौआके माध्यमस' समेकित वोध-ज्ञान देब' चाहैछ । आ' से मीठ शब्दमे, सुरेबगर बोल-भासमे, गेय गीतक माध्यमे । ई एहि दुआरे जे हमर धीयापूताके नीतिक ज्ञान आ उपदेश खौरछाह आ औगताह नै लगैन । ऐस' हरकै, भरकै, कात नै लगथि । हिनक ई गीत एहन उजहल छै, एकर 'राइम' एहन सपरल छै जे एकरा कतबो गयतै, खेलतै, तैयो ने मने अघएतै आ नै बूझै पएतै जे हमरा परोक्षरूपस' अहू एहनो गीतसबके माध्यमे बड़-बड़ नीति, संसारिकताक पाठ पढ़ाओलन्हि अछि–

अपना बेरमे शीष झुकओतौक

करतौक तोरा सलाम

तोरा बेरमे मुँह घुमओतौक

फुर्र भ' जएतौक गाम ।
ढुम- ढुम बौआ ढुम-ढुम-ढुम
कौआ बजलौक सुन-सुन-सुन
सुन-सुन-सुन । सुन-सुन-सुन
चेतिकय रहिहे सुन-सुन-सुन ।

उड़ि-उड़ि अएतौक
आँखि घुमएतौक
ससरिकय अयतौक आगाँ
मारि लोल फेर भागि पड़अएतौक
एहन होइ छै कागा ।
ढुम-ढुम बौआ ढुम-ढुम-ढुम
कौआ बजलौक सुन-सुन-सुन
सुन-सुन-सुन सुन-सुन-सुन
चेतिकय रहिहे सुन-सुन-सुन ।

बड़ घैहर, लक्का-लौतार, हवेलिया घरनदारक कहबैका बड़ैता वृषेश जतबे पाकल पड़ोरिया, पकठोस अकिलगर छथि ओतबे ई अनुभवसिद्ध, सिराएल-भ्फुनाएल जुगपुरूख छथि । ई पहुंचल राजनीतिकर्मीयो छथि आ नेपालमे व्यवस्था परिवर्त्तनक तरल-तबधल कालखण्डमे जनकपुरधामक नगर पिता/प्रमुख तथा संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रक पहिल राष्ट्रियसभाक सम्मानित सदस्यो रहि चुकल छथि । सएह नहि, मिथिलाक गौरवमय मान पहचानबला लिखिया लिखल पाग-पगड़ी ल'क', ओत्त', मैथिलीमे सपत ग्रहणक', सगौरव उपस्थिति दर्ज करा, मिथिला-मैथिलक स्वाभिमानके बढ़ौने छथि । ई हिनक एगोबात भेल । सूक्ष्म निरीक्षणक प्रमाणिकता आ अनुभवसिद्ध कविलौटीक सृजनात्मक अभिव्यक्ति क्षमता ओ सामर्थ्य हिनकामे एतेक छन्हि जे प्रतिगमन कालमे, हिनक लिखल 'आन्दोलन' कविता संग्रहक सबहे गीत/कविता राजनैतिक हाक-वाक दैत, खप्प द'

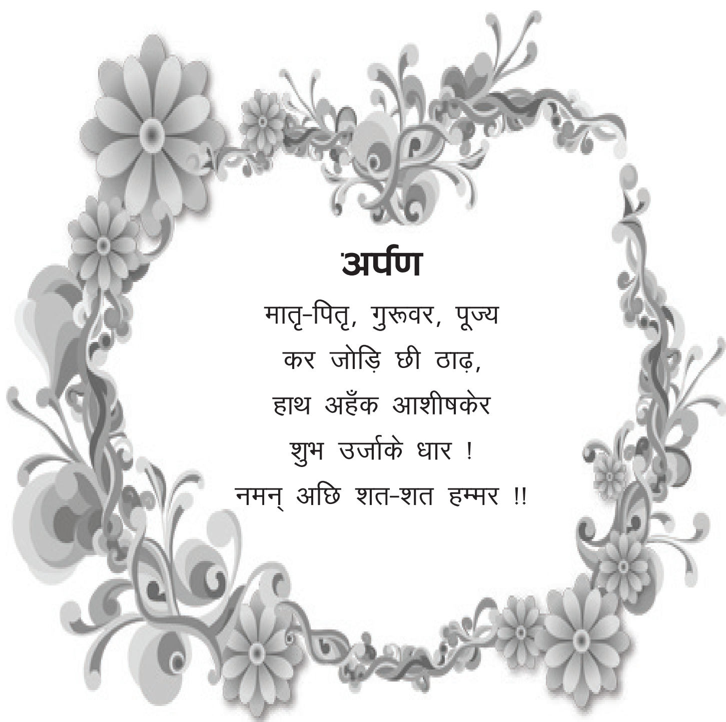
बैसि साफे रूपान्तरित भेल परिलक्षित भेल, देखएमे अबैछ । समकालीन मैथिली कवि-मनीषीसबमे ई बेस गरना-गुदानबला, सुप्रतिष्ठित, सुरखुरू छथि । बहुआयामिक व्यक्तित्वक एहि कविक रचनाधर्मिता सबरसी, मीठ आ लगहैर-पुरहिया रहल अछि । भङठल-भुतलाएल युग आ उधियाइत-पताइत समय-सन्दर्भ तथा बेंटछुटू-करमघटू आधुनिकता, वैश्विकतास' लफरल बतियाइत, ठोकरियबैत संवाद करैत काल, ई ओकर सबहे कर्म-किरदानीके, बौआएल मनक सबहे अंतरी-भोंटीक ऐल-मैलके, कन्छी काटि भगैत-पराइत भाव-भासक लोकके नङन-बेनङन, देखार-चिन्हार, क'ध' दैत छथिन्ह–

फादर-मदर म्यूजियम आइटम
बरस दिनमे पोछी धोइ
फेसबूकमे गोर लागिकए
सोंझाँ शूलक बिआ बोइ !

आओर 'डे'मे बसियो आफत
'फादरडे'मे दिऔ मिठाइ
'मदरडे'मे नीकनिकुत आ
पूरे साल खूब खिंच-खिंचाइ !

भ' सकए, कहिओ ने भेंटू
कुरियरसँ करिऔ प्रणाम
अछि आशीष धन्य पूतजनसभ
रहू चिरंजीव फैलओ नाम !





अर्पण

मातृ-पितृ, गुरूवर, पूज्य
कर जोड़ि छी ठाढ़,
हाथ अहँक आशीषकेर
शुभ उर्जाके धार !
नमन् अछि शत-शत हम्मर !!

विनय

किछुसँ किछु लिखा जाइत छैक
अनेरे किछु देखा जाइत छैक,
बात बढ़ि क' बनि जाइत छैक बतंगर
बौक-बताह बना जाइत छैक ।

स्मृतिक सालसभ सखा संगक ख्यालसभ
बिसरा दैछ वर्तमान, 'बाल' बना जाइत छैक,
संगीक संग-रंग लहरक हिलोरेँ दंग
ताल फेर तहियेक ढुम-ढुमा जाइत छैक,
गुम्मी बेथितिकेर जखन छाती जरबए लगैछ
अनायासे आङुरसभ नालपर ठोका जाइत छैक !
ढोल'क घोलमे ईहो आ एहनो बोल, बेताले सही धुना जाइत छैक ।
मतसुन्नक 'मत' आ 'मखौल', अपने अनजाने बुना बुना जाइत छैक ॥

तस्मै श्री गुरुवे नमः।

जड़-अजड़, चेतन-अचेतन
अहम्-ब्रह्म सन अभेदन
सभतरि गुरु विद्यमान ।
देखा रहल सभ
सिखा रहल सभ
आशीष दैत समान ।
के छोट अछि
के अछि नमहर
कतहु करथि ने भान ।

पल-पल पग-पग
करैत प्रवाहित
बहबैत पुञ्ज प्रज्ञान ।
तैँ गुरु ब्रह्मा, तैँ गुरु विष्णु
तैँ गुरु भोल महेश
हे गुरुतत्व, धन्य अहाँ
धन-धन अहँक अनुदेश !
तस्मै श्री गुरुवेनमः !!

विषय-सूची

नाल-खण्ड

शुभकामना !



जागथु सभ गोसाईं
घर-घरक पीढ़ी
बरहमबाबा
गढ़ी ओ गहबरसभ
उठओ माटि मिथिलाक
सहस्त्र हाथ ह'रक फार नेने
चढ़थुन्ह 'शक्ति'
निकलि चिनवारसँ
अजस्त्र आगि संग भवानीसभ
जरओ सभ जमल
जडवत् शुम्भ-निशुम्भ
गलओ दृष्टि–शूलसँ
महिषासुर !
नमो, दुर्गे दुर्गा उद्धारिणी
शक्ति दिऔक
जन-जनमे !!



बाल-खण्ड



फर्र-फर्र सुगा



फर्र-फर्र सुगा
खाए मिरचाइ,
पिंजरामे बन्न कएने
क्रूर कसाइ !

राम-राम बोलु कहे,
मन मुदा कारी
रटैत-रटैत सुगाके
ग'र भेलै कारी !

ग'र छोड़ाबए लेल
लाल तिलकोर
खाइअ गट-गट
मन छैक घोर !

कहै छै बौआ
तारकेँ काटू
फर्र द' उड़ू
आकाशकेँ पाटू !

बिनु कटने
ने छूटत बान्ह
कतबो झुकाएब
शीश आ कान्ह !



करोना



सुन्दर पात
सुन्दर फूल
घेरए करोना
बकरीक हूल ।

तोड़ि फड़ दाइ
अचार बनओलनि
नाचि-नाचि बौआ
चट चटकओलनि ।

चट-चट बाजए
जी आ तालु
डरे भागल
बुढ़बा भालु !



गुड्डी उड़ए आकाशमे



गुड्डी उड़ए आकाशमे
लटाइ अपन पासमे .... ।
१
दहिना काटू, बामा काटू
कखनो छोड़ू निच्चा
डोरी आहाँ तनबै जखने
चढ़ि जाएत ओ उच्चा ।

गुड्डी उड़ए आकाशमे
लटाइ अपन पासमे .... ।
२
नाचि-नाचि आओत
संग बझाओत तखन करत लड़ाइ
काटि संगीकेँ उपर उड़त
अपन करत बड़ाइ ।

गुड्डी उड़ए आकाशमे
लटाइ अपन पासमे ....।



चीनीकटोरा कड़-कड़ बोले



१
चीनीकटोरा कड़-कड़ बोले ।
धीया-पूताके मनमा डोले ।।
२
टनटन घण्टी जखने बाजे ।
बौआ दाइकँ दौड़ि बजावे ।।
चलिऔ दैया दिऔक धान ।
चिनीकटोरा कहिऔ तान ।।
३
डमडम डमरू हवा मिठाइ ।
मुँहमे धरिते सोझे बिलाइ ।।
एक चौअन्नी मिठगर जादू ।
मन होए सभ किनक' भागू ।।
नेना-भुटका घेरए दाइ ।
डम-डम दैया हवा मिठाइ ।।
४
नै ओइ पटना नै ओइ दिल्ली ।
सभसँ नीक गामेके झिल्ली ।।
नूनगर झिल्ली मिट्ठ बतासा ।
अगहन मास धीयाके आशा ।।
फटकि सूपमे धान उठाउ ।
भरिमन मुरही कचरी खाउ ।।



चौरचन चौरचन उगल चान



चौरचन चौरचन उगल चान
झट दए पूरी दही आन
मड़ड़ भाङि, खूब खाएब पूरी
सभ भाइ सभ आङ्गन घूरी
मिठ पिरूकिआ खोआ-खीर
लाबह जल्दी छूटल धीर
तोड़ब तरूआ आ तिलकोर
भैया जो तौं नरिअल फोड़
तैपर देबै मिठगर पान
लाल ठोरके अपने शान !



ढुम-ढुम बौआ



ढुमढुम बौआ ढुम-ढुम-ढुम
कौआ बजलौक सुन-सुन-सुन
सुन-सुन-सुन २
चेतिकय रहिहे सुन-सुन-सुन ।

१
पाछासँ अओतौक
सुर मिलओतौक
आओर बजतौक काँ-काँ
मौका मिलिते मारि झपट्टा
तोरा कहतौक जाँ-जाँ ।
ढुम-ढुम बौआ ढुम-ढुम-ढुम
कौआ बजलौक सुन-सुन-सुन
सुन-सुन-सुन २
चेतिकय रहिहे सुन-सुन-सुन ।

२

अपना बेरमे शीष झुकओतौक
करतौक तोरा सलाम
तोरा बेरमे मुँह घुमओतौक
फुर्र भ' जएतौक गाम ।
ढुम-ढुम बौआ ढुम-ढुम-ढुम
कौआ बजलौक सुन-सुन-सुन
सुन-सुन-सुन २
चेतिकय रहिहे सुन-सुन-सुन ।

३

उड़ि-उड़ि अएतौक
आँखि घुमएतौक
ससरिकय अएतौक आगाँ
मारि लोल फेर भागि पड़एतौक
एहन होइ छै कागा ।
ढुम-ढुम बौआ ढुम-ढुम-ढुम
कौआ बजलौक सुन-सुन-सुन
सुन-सुन-सुन २
चेतिकय रहिहे सुन-सुन-सुन ।



फुर्र-फुर्र बगड़ा



फुर्र-फुर्र बगड़ा उड़ि-उड़ि बैसए,
किरा-फतिंगा बिछ-बिछ खाए ।
घिर्र-घिर्र घूमि चहुँओर देखिकए,
सुर्र-फुर्र अपन खोंता जाए ।

चीं-चीं लोल चिआरए भुटका
बगड़ा उगलि खुअओने जाए ।
याहले वाहले मोटाएल भुटका
जोड़ी बनि फुर्र भ' जाए ।।

फेर उएह दिन जिनगी ओहिना
फुर्र-फुर्र भरि अकाश रमाए ।
फुर्र-फुर्र बगड़ा उड़ि-उड़ि बैसए
किरा-फतिंगा बिछ-बिछ खाए ।।



फोन करैअ नानाजी



फोन करैअ नानाजी,
गबिऔ एकटा गानाजी ।
पापा-मम्मी अफिस दौड़ए,
टिफिनमे धएने खानाजी ॥

अइ घर ओइ घर, ताकी नानी ।
माथ दुखाइते, रगड़ए चानी ॥
मामा आबि उठाबथि कोरा ।
मामी कहथि ई बौआ मोरा ॥
मौसी दौड़ए हम्मर बाउ ।
ता ता थैया एम्हर आउ ॥

फोन करैअ नानाजी,
गबिऔ एकटा गानाजी ।
पापा-मम्मी अफिस दौड़ए,
टिफिनमे धएने खानाजी ॥



ता ता थैया करू बौआ



ता ता थैया करू बौआ
थैया थैया थैया ।
माय खुआबे दूध-रोटी
तेल लगाबे दैया ।।
१
बाबा बोकोपर घुमाबथि
गीत सुनाबथि दैया
बाबु टिक-टिक घोड़ा बनथि
थपड़ी पिटथि मैया ।
२
मामा लएलथि चिनीकटोरा
मामी देलथि ढौआ
नाना रहि-रहि कोर बजाबथि
रे थैया कर रे बौआ !

३

बाबा गाबथि, राग सुनाबथि
दाइ करे टिटकारी
हँसू-हँसू खूब बौआ हम्मर
छोड़ू ने किलकारी !

४

कक्का कहथि ता ता थैया
आ नाच करैअ भैया
दीदी उछलि-उछलि क' कूदए
हुलसि उठैअ बौआ !

ता ता थैया करू बौआ
थैया थैया थैया
माय खुआबे दूध-रोटी
तेल लगाबे दैया !



होरी अएलै हुर्र्र्र्र !



होरी अएलै हुर्र्र्र्र !
बौआ दौड़ल फुर्र्र्र्र !!

१

काकी छानथि मालपू
माय पकाबथि बड़ी
दीदी तरथि तरूआ-तिमन
भौजी कट-कट गड़ी
होरी अएलै हुर्र्र्र्र !
बौआ दौड़ल फुर्र्र्र्र !!

२

तासा बजलै, ढोल बजलै
बजलै झालि मँजीरा
झूमि-झूमिकए काका भैया
बाँटथि पानक बीड़ा
होरी अएलै हुर्र्र्र्र !
बौआ दौड़ल फुर्र्र्र्र !!

३

केश लाल अछि गाल लाल अछि
लाल अछि धोती-साड़ी
सररर सररर उगलि रहल अछि
रंग भरल पिचकारी
होरी अएलै हुर्ररर !
बौआ दौड़ल फुर्ररर !!

४

बाबा हँसथि दाइ हँसथि
हँसथि बाबू भैया
दीदी भौजी हँसथि देखू
मुस्की दैअ मैया
होरी अएलै हुर्ररर !
बौआ दौड़ल फुर्ररर !!

५

खुशी हँसी रंग-अबीरक
दिन केहन ई होरी
मनेमन सोचै अछि बौआ
किएक एहन दिन फेरी ?!
होरी अएलै हुर्ररर !
बौआ दौड़ल फुर्ररर !!



चकैके चकढुम



चकैके चकढुम
मकैके लाबा
अएलौ पोती
देखही बाबा !

१.

फुदकि-फुदकि
नचैअ पोती
पकड़ि-पकड़िकए
बाबाके धोती
चकैके चकढुम, मकैके लाबा ....

२.

भरि घर चकमक
चकमक मोती
खिलखिल जखन
हँसैअ पोती
चकै के चकढुम, मकै के लाबा ....

३.

देखही अएलौ

तोहर दाइ

हाथमे नेने

मुरही लाइ

चकैके चकढुम, मकैके लाबा ....

४.

दौड़-दौड़ पोती

बैसए कोरा

कहैअ बाबा

बनू ने घोड़ा

चकैके चकढुम, मकैके लाबा ....

५.

बाबा गाबथि

डम-डम गीत

दाइके लोरी

भरले प्रीत

चकैके चकढुम, मकैके लाबा ....



मज्जर



आमक मज्जर गामेगाम
भन-भन भँवरा ठामेठाम
नेओते बौआ चल गे दाइ
गाछे तरमे रोटी खाइ !

देल सुगन्ध आमक खूब आशा
बनत अँचार अमोट अमरासा
खसत आम पीअर आ लाल
भरत देह आ डग-डग गाल !



पोखरिक कात



१

पोखरिक कात
आमक गाछ
आमक गाछमे
हिड़ला लागल
बौआ देखिते
दौडिकए भागल
हिड़ला हिलए हिर्रररररररर
बौआ झुलए फिर्रररररररर ।

२.

पोखरिक माछ
घूमि-घूमि घाट
बुल-बुल करैत
उठबए माथ
माछ करैअ
बौआ शोर
पानिमे गोल-गोल
उठए हिलोर
हिलोर हिलए हुर्रररररररररररर
बौआ झुलए फिर्रररररररररर ।



सोन चिड़ैया



नाना, नाना !
देखू नाना ।
सोन चिड़ैया
चुगए दाना ॥
फुर्र-फुर्र उड़ए
खूब चकुआए ।
नाचि-नाचि फेर
बिछिकए खाए ॥
चीं-चीं करैत ई
गबैअ गाना ।
सोन चिड़ैया
देखियौ नाना ॥



बिम्ब बनल मीत आ मेल



हमरि पोती
खेलए खेल
बिम्ब बनल अछि
मीत आ मेल ।

अनुपम दर्पण
निश्छल छाया
मीलल रंग एक
मन आ काया ।

खुशीये खिलखिल
स्पर्श आ शोर
देखू दर्पण
स्वयं विभोर ।

विस्मृत नेनपन
प्रस्तुत भेल
हमरि पोती
खेलए खेल !



चकमक-चकमक दीयाबाती



पोता पोती बाबाक टोली ।
चलू खेलए उक्कालोली ।।

भगलौ कारी अन्हार रे !
ध'र-ध'र खेहार रे !!
ई अन्हार अछि बड़ शैतान,
मिझए दीया कि लगले फान !

पोता पोती दीप जरा ले
घेरैत अन्हरियाकँ पड़ा ले
मानक बाती ठानिक तेल
के मिझएतौक रे बकलेल !

दीयाबाती मनमे जाय
सभ अन्हार सुन्ने बनि जाय
चकमक मन हो जुड़ले छाती
चकमक-चकमक दीयाबाती !!



मुसरी बड्ड पेड़इअ



१

रे बौआ, मुसरी बड्ड पेड़इअ !
नवका अङ्गासँ डाह करइअ,
कुत्-कुत क' कुतड़इअ !
मूनल कोठीपर चिहुँ-चिहुँ क' क',
फोडि सभ अन्न छिटइअ !!
रे बौआ, मुसरी बड्ड पेड़इअ !

२

विजली एकरा किछने करै छै
तार कुतरि छोड़ि दइअ !
कुतरल तार छूबिते भटका द'
पाँच हाथ भटकइअ !!
रे बौआ मुसरी बड्ड पेड़इअ !

३

बिनु नेओतल ई मुसरीजनसभ
पड़ल-पड़ल ढकड़इअ !
अन्न-पानि जौं निहटि जाइत छैक,
चुप्पे ससरि टघड़इअ !!
रे बौआ मुसरी बड्ड पेड़इअ !



लाउ चूड़लाइ



सुनू सुनू बुढ़िया दाइ,
कतए रखलहुँ लाउ चूड़लाइ ।
१
राजा बेटा खिस्सा सुन
भेल अबेर आँखि तों मुन
एक छल राजा, एक सिपाही
एक रूप त दोसर छाँही
मारि हरिन मिलि रथपर धएलक
नगरभरि खूब शोर मचओलक
भीड़भाड़मे देखलक नाइ
मुन आँखि आब छोड़ चूड़लाइ
सुनू सुनू बुढ़िया दाइ,
कतए रखलहुँ लाउ चूड़लाइ ।
२
राजा सभ दिन हरिने मारत
दिन दुखीपर रोब ऊ झाड़त
नइ पकड़त ओ डाकू चोर
राजाक नामेँ होइ छी बोर
देखलथि बाबा देखलथि बाउ
आबो त कने मोन घुमाउ
मानत नइ आब कोनो भाइ
बझि गेल छैक धरमलड़ाइ
सुनू सुनू बुढ़िया दाइ,
कतए रखलहुँ लाउ चूड़लाइ ।



गे दैया हमरो दही किताब



गे दैया हमरो दही किताब, गे दैया हमरो दही किताब
जोड़-घटाओ हमहूँ करबै, सिखबै सभ हिसाब ।

भैयासभ इसकूल जाइत अछि
हम कटै छी घास ।
इसकूल देखि मोन जागि उठैत अछि
हमरो लगैछ पिआस ।
हमहूँ पढ़बै बड़का बनबै, देरी नहि कर आब
गे दैया हमरो दही किताब ।

बेटा-बेटी तोरहिं जनमल
किए करैछैँ भेद
दुनू समाजक मूल अंग अछि
एकटा लेल की खेद ?!
युग-युगसँ सताओल दैया, आब आरो ने दाब
गे दैया हमरो दही किताब ।

बेटा पोसत, बेटी ने पोसत
ई छैक भरमक जाल
अहीसँ आरो पिछड़ल जाइत अछि
बनि समाज कंकाल
आबो त बेटीक मनकैँ बुझू, बुझू मनक भाव
गे दैया हमरो दही किताब ।



आ आ रे खंजन चिड़ैया !



आ आ रे खंजन चिड़ैया, बौआकेँ झुला
पेखरिके भीड़पर हिड़ला लगा ।

चाउर देबौ-खुद्दी देबौ, देबौ दालिक कुन्नी
चींची-चींची गाबि-गाबि क' कने सुता दही ने मुन्नी
मीठ-मीठ सपनासँ बौआकेँ भुला
धीरे-धीरे सारेगम मुरली बजा
आ आ रे खंजन चिड़ैया, बौआकेँ झुला
पेखरिके भीड़पर हिड़ला लगा ।

फर्रफर्र तोहर पांखि करैअ चंचल तोहर मन
खुशी-खजाना घर-घर बँटैत हरदम क्षणे-क्षण
नाचि-नाचि कए हम्मर बौआ कने फुसला
गम-गम फूलसँ एकर सेजिया सजा
आ आ रे खंजन चिड़ैया, बौआकेँ झुला
पेखरिके भीड़पर हिड़ला लगा ।



ताल-खण्ड



सियाजीक छन्हि आइ बिआह, जनकपुरमे



चलथु बहिनियाँ, सियाजीके देखए
सियाजीक छन्हि आइ बिआह, जनकपुरमे !
१
सजल-भरल आइ विदेह नगर अछि
पसरल सभतरि रङ्ग अटल अछि
अछि सभ भाव-विभोर,जनकपुरमे !
गाबथु बहिनियाँ लगनक पांति
सियाजीक छैन्हि आइ बिआह जनकपुरमे !
चलथु बहिनियाँ, सियाजीके देखए
सियाजीक छैन्हि आइ बिआह जनकपुरमे !!
२
अवधकिशोर धनुष भङ्ग कएलैन्हि
जनकसुता वरमाल लगोलैन्हि
नाचल मिथिला मोर, जनकपुरमे !
लिखथु बहिनियाँ बाँस आ कोबर
सियाजीक छैन्हि आइ बिआह जनकपुरमे !
चलथु बहिनियाँ, सियाजीके देखए
सियाजीक छन्हि आइ बिआह जनकपुरमे !!

३

अपन जनकके प्रण छल भारी
पार लगोलन्हि जे त्रिपुरारी
धन्य भेल मिथिलाक कोर, जनकपुरमे !
करथु बहिनियाँ, वरक चुमाओन
सियाजीक छैन्हि आइ बिआह जनकपुरमे !
चलथु बहिनियाँ, सियाजीके देखए
सियाजीक छैन्हि आइ बिआह जनकपुरमे !!

४

रथ घोड़ा आओर अछि हाथी
सजिकय आएल छैक बरियाती
बजैअ ढोल चहुँओर जनकपुरमे !
परिछथु बहिनियाँ राम-लखनकँ
सियाजीक छैन्हि आइ बिआह जनकपुरमे !
चलथु बहिनियाँ, सियाजीके देखए
सियाजीक छैन्हि आइ बिआह जनकपुरमे !!



शुभकामना गीत



शुभे हो शुभे ! शुभ-शुभ रहे अंगनमा !! शुभे हो शुभे !!!
रहे शक्तिक चरणमा ! शुभे हो शुभे !!

१

स्वकेर मान रहे
सभतरि सम्मान रहे
गौरव आ शान रहे
शुभे हो शुभे ! शुभ-शुभ रहे अंगनमा !! शुभे हो शुभे !!!
रहे शक्तिक चरणमा ! शुभे हो शुभे !!

२

स्वस्थ अपन जान रहे
सेवापर प्राण रहे
सद्‌गुणके खान रहे
शुभे हो शुभे ! शुभ-शुभ रहे अंगनमा !! शुभे हो शुभे !!!
रहे शक्तिक चरणमा ! शुभे हो शुभे !!

३

सुखक मचान रहे
सभ घरमे धान रहे
सुयश सुदान रहे
शुभे हो शुभे ! शुभ-शुभ रहे अंगनमा !! शुभे हो शुभे !!!
रहे शक्तिक चरणमा ! शुभे हो शुभे !!

४

सोना सन्तान रहे
समृद्ध समांग रहे
शुभ-शुभके गान रहे
शुभे हो शुभे ! शुभ-शुभ रहे अंगनमा !! शुभे हो शुभे !!!
रहे शक्तिक चरणमा ! शुभे हो शुभे !!



जागरण गीत



जाग जाग जाग रे
निन्न आब त्याग रे !
बहैछ क्रान्ति पवन आब
तन-मनसँ लाग रे !!

१

मशाल बनि बढ़ल जन
भगैत देख अछि तम
विभेद हएत आब खतम
पाएब हम सभ सम
अपने बनाउ आब अपन
भाग रे भाग रे !

२

कखन तक पड़ल रहब
अधिकार छोड़ि सूतल रहब
प्रतिकारके एहि क्षणमे
डेराए भगैत फिड़ल रहब
गाउ अपन मुक्तिक
अपन राग रे !

३

बान्हि मुट्ठी कसिकए
ठेहुनियाँ दए बैसकए
लड़ू न्याय लेल बन्धु
शक्तिसभ समेटिकए
बढ़ू उठू जीतके
ठाढ़ अछि बाग रे !



हँ रे सुगबा



हँ रे सुगबा (५)
कने हमरो घुमा (७)
रे गगनमा । (५)
हँ रे सुगबा (५)
उड़ि-उड़ि भोरक (७)
ऊ किरणमा ॥ (५)

१

खूब स्वच्छन्द (५)
उड़ान लगबितौं (७)
पीसौं सिनेह (५)
परान मिलबितौं (७)
हिया जुड़बितौं (७)
हँ रे सुगबा (५)
कने हमरो भुमा (७)
रे लगनमा । (५)

२

छोड़ि पी मोर (५)

ई लोक घुमोलनि (७)

अंग-अंगमे (५)

ई आगि लगोलनि (७)

बहुत सतोलनि (७)

हँ रे सुगबा (५)

कने हमरो चुमा (७)

रे चरणमा । (५)

३

लगा धिआन (५)

हम नामे जपितौं (७)

फेरो जियाकेँ (५)

हुनके चढ़बितौं (७)

खूब तपबितौं (७)

सुन सुगबा (५)

कने हमरो गुना (७)

गुण-ज्ञनमा । (५)



धक्-धक् करय करेज मोर



धक्-धक् करए करेज मोर ।
फर्र-फर्र फड़कय अङ्गक पोर ।।
पियकेर याद आएल भौजी
पियकेर याद आएल ...... ।

१

गम-गम फूलक मधुर सुगन्ध
लगैअ जेना सोर करए ।
झरझर झरैत झरना भौजी
नाचय हेतु मन जोड़ करए ।।
चकबा चकबी गाबिकए गीत ।
चढ़ा देलक निर्मोहीसँ प्रीत ।।
पियकेर याद आएल भौजी
पियकेर याद आएल ...... ।

२

साओनक मेघसँ भरल आकाश ।

बढ़ा रहल अछि प्रेम पिआस ।।

नुकभुक करैत चान भौजी ।

रग-रगमे बहबैछ बसात ।।

कू-कू कोइली आओर काग ।

जगा देलक अछि तानिकय राग ।।

पियकेर याद आएल भौजी

पियकेर याद आएल ...... ।

३

हेरा गेल अछि मनक चैन ।

युग भऽ गेल आब एकहिं रैन ।।

पठा दिऔ कहुना सन्देश

जाहिसँ आबथि हमर महेश

पियकेर याद आएल भौजी

पियकेर याद आएल ...... ।



होरीक गीत



युवा - गोरकी नाचए पहिर चुनरिया, जियरा झूमल जाय रे !
युवती - धिन धिन ता ता बाजे रे लहरी, हियरा झूमल जाय रे !

१

युवा - फूलल गुलाब गमकलि चम्पा, महकि ऊठल बन जोर !
रग-रग रागक, रागकेर गाबए, मांगए नेहक कोर !!
शीतल पवन ई मारए अगनमा, मर्दैं सहल ने जाए रे !
गोरकी नाचए पहिर चुनरिया, जियरा झूमल जाय रे !!

२

युवती - आएल बसन्त छाएल फगुनी, कुहकए कोइली चहुँओर !
टनकए तन झनकए झन-झनकक, गाढ़ नीन्न पहुँ मोर !!
खोलू नयन ओ नेही सजनमा, भानु उगल अब जाए रे !
धिन धिन ता ता बाजे रे लहरी, हियरा झूमल जाय रे !!

३,

युवा - लाल रंग सब अंग लाल छै, लाले के छै जोर !
लाल गाल तैपर गुलाल छै, लाले गोरीके ठोर !!
लाले लगओलक लाली लगनमा, लाले लाल देखाए रे !
गोरकी नाचए पहिर चुनरिया, जियरा झूमल जाय रे !!

४

युवती - लाल कहै छै लालेके संग, लालीक भेलै शोर !
लाले दिन राति छै लाले, सुखद लालिमा भोर !!
लाले निशासँ घुमए गगनमा, लाले पिय देखाए रे !
धिन धिन ता ता बाजे रे लहरी, हियरा झूमल जाय रे !!



नइ आउ एना मोनमे



नइ आउ एना मोनमे ...
जे रोम सिहरि जाइय
लजाकए सकुचाइय,
नइ आउ एना मोनमे ।
१
जतए-जतए देखैत छी हम
नचैत हँसैत ठमैत छी हम
ने खीचू जुनि एना हमरा ...
जे होश हमर हेराइय
लहरि जकाँ लहराइय !
नइ आउ एना मोनमे ।
२
ई धकधकी बढ़ए कोना
पवन देखू बहए जेना
पसरि जाइछ निसा एहन २
जे देह हमर पताइय
उड़ैत चलि जाइय !
नइ आउ एना मोनमे ।
३
बसन्त ई मुदइ भेल
हृदयमे टीस शूल देल
मेटाइत नहि मेटैत अछि २
जे बढ़िते चलि जाइय
आ मिठगर दुखाइय ।
नइ आउ एना मोनमे ।



नजरि अहाँक



नजरि आहाँक चितकँ जूड़ा दैत अछि,
घुराकए क्षणँ सही जिनगी जगा दैत अछि ।
धसल डीहपर लौकाकए फेर स्वप्न महल,
सूखल कोनमे कनोजर लगा दैत अछि ।।

१

बजाकए बेर-बेर सोझे घुराओल छी हम,
बैसाकए सदिखन हँसी उड़ाओल छी हम ।
हकारि पाँतिमे पँजिआकय लगमे अपन,
लतारि ईखसँ उठाकय भगाओल छी हम ।
सन्देश प्रेमके अखनो फँसा लैत अछि ।
जड़ए लेले सही फेरो खरादैत अछि ।।

२

उठाकए उपर नीचाँ खसाओल छी हम,
जड़ाकए ज्योति अनेरे मिझाओल छी हम ।
लगाकए आगि सिनेहक रग-रगमे रगड़ि,
बिना कसूर निसोहर बनाओल छी हम ।।
झोंक एक आशकेर फेरो नचा दैत अछि,
उमंगक रङसँ पल-पलकँ सजा दैत अछि ।

नजरि आहाँक चितकेर जुडा दैत अछि ,
घुराकए क्षणँ सही जिनगी जगा दैत अछि ।
धसल डीहपर लौकाकए फेर स्वप्न महल,
सूखल कोनमे कनोजर लगा दैत अछि ।।



प्रीतक गीतमे



प्रीतक गीतमे पिय तकै छी,
हियामे सिनेह भरै छी ।
कतहु किय ने होउ ऽऽऽऽऽ २
पिय मोर अहींकेर
सभतरि हम पबै छी ।।

१

जग-मग जग-मग करइत जग ई
निपट अन्हार लगैअ ऽऽऽऽऽऽ ।
स्पर्श अहाँकेर यादक पड़िते
चकमक कऽ चमकैअ ऽऽऽऽऽऽ ।।
घोर विकट वन-उपवनमे तब
जोरसँ डेग भरै छी .... ।

२

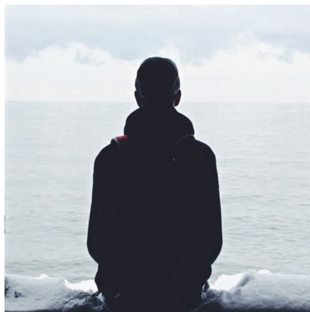
सभ सुखसार, सरस संगीत लय
सनकल छाँह लगैअ ऽऽऽऽऽऽ ।
धस-धस धसैत धरती जेना
पग-पग हमर धरैअ ऽऽऽऽऽऽ ।।
सिनेहक डोर अहाँकेर पबिते
नभमे फेर उड़ै छी ....

३

छप्पन भोग, योगसभ भोगक
तीत खटाइन लगैअ ऽऽऽऽऽऽ ।
पिय बिनु हमर घोर भेल मन ई
सभतरि माटि देखइअ ऽऽऽऽऽऽ ।।
रूप अहाँकेर उगिते वर मोर
मोर जकाँ नचै छी ....



घूरि-घूरिकए अहींक दुआरिपर



घूरि-घूरिकए अहींक दुआरिपर
हुरकति अछि मन चलू घूरि चली ।

छल भेल खूब छल होइत रहत
लए छलनीयेँ तन चलू घूरि चली ।

धोखाक लेखा जे धोखारत नइँ किछु
फेर धोखहिं ने किया चलू घूरि चली ।

ई दिवानगी अछि टेरैत नइँ गम
दम ओहुना बढ़त चलू घूरि चली ।

बहैत रहत सैह बढ़ैत रहत
उएह मुक्ति थिकैक चलू घूरि चलू ।



झुनुक झुन झुनझुन पायल बाजए



झुनुक झुन झुनझुन पायल बाजए २
पिया संग नेह जगाबय रे
झुनुक झुन झुनझुन पायल बाजए २
१
फूलल बसन्त मगमग करइछ
कोइली कुहकय आजे
पियकँ सुमरि मोन सिहरि उठैत अछि
रक्तिम भेल छी लाजे ।
झुनुक झुन झुनझुन पायल बाजए २
पियासंग नेह जगाबय रे
झुनुक झुन झुनझुन पायल बाजए २

२
विरह राति युग-युग अनन्त अछि
युग पियसंग क्षण लागय
विरह वेदनसँ मोन अछि बेधल
क्षण-क्षण युग भए आबय ।
झुनुक झुन झुनझुन पायल बाजए २
पिया संग नेह जगाबय रे
झुनुक झुन झुनझुन पायल बाजए २



एकटा युगल गीत



हूँ..हूँ किछुओ सुनलिअइ अहाँ ?!
हे यइ, किछुओ कहलिअइ अहाँ ?!
हूँ..हूँ किछुओ सुनलिअइ अहाँ ?!
हे यइ, किछुओ कहलिअइ अहाँ ?!

१

ओतय जे कोइली छै
कू..कू करै छै
सोहाओन टीससँ
हिआ भरै छै
किछुओ बुझलिअइ अहाँ ?!
हे..यौ, किछुओ सुनलिअइ अहाँ ?! ....

२

उपर जे चकबा छै
ता धीन करै छै
रागक राग ओ झूमि-झूमि गबै छै
किछुओ देखलिअइ अहाँ ?!
हे..येइ किछुओ देखलिअइ अहाँ ?! ....

३

बनमे ओ मोरनी

छम-छम नचै छै

नेह कनेआँ त झुकि-झुकि नेआँतै छै

किछुओ जनलिअइ अहाँ ?!

हे..यौ किछुओ जनलिअइ अहाँ ?! ....

४

कुमुद-कुमदिनि

देखिऔ हिलै छै

हिलोरैं हिल-हिल कोना रमै छै

किछुओ गमलिअइ अहाँ ?!

हे..येइ किछुओ गमलिअइ अहाँ ?! ....

हूँ..हूँ किछुओ सुनलिअइ अहाँ ?!

हे यइ, किछुओ कहलिअइ अहाँ ?!

हूँ..हूँ किछुओ सुनलिअइ अहाँ ?!

हे यइ, किछुओ कहलिअइ अहाँ ?!



आश बढ़िते रहल पिआस चढ़िते रहल



१

आश बढ़िते रहल पिआस चढ़िते रहल
याद अहाँके सजन सदि पड़िते रहल ।
एना कटिते कटैत नइँ अछि दिन राति,
झोंक शीतलो पवनके तपविते रहल ॥

२

केओ मिलन लेल हकासल दौड़ैत हएत,
बिछोहो एतए जे गरमविते रहल ।
केओ किनार ला नापल सवासल हएत,
गरज बढ़िते रहल मन जगबिते रहल ।

३

धक-धक छातीक धड़कि सदिखन मुदा
नहुँए-नहुँए जे नाम जपबिते रहल ।
हम नइँ जानी पिय कतए की छैक ?
सपना अहींक जीवन सजबिते रहल ॥



गोरकी नजरि मोर



गोरकी नजरि मोर हरि लेल परनमा
झलक एक देखाए चलि गेल सजनमा ।

१

गोरीक केश जेना साओन लहराइत होय
माथक ठोपसँ जेना सूर्य बहराइत होय
सभसँ पिजाओल छन्हि हिनकर नयनमा
गोरकी नजरि मोर हरि लेल परनमा
झलक देखाए एक चलि गेल सजनमा ।

२

डाँड़ एहन जनो रबड़ मोसराएल होय
लचकैत नितम्ब जेना बड़ अगराएल होय
लाल-लाल ठोरसँ धधकैअ अगनिमा
गोरकी नजरि मोर हरि लेल परनमा
झलक देखाए एक चलि गेल सजनमा

३

गालक लालीमे चान मुस्काइ छन्हि
खोपाक गुलाब जेना रहि-रहि लजाइ छन्हि
पाजेबक झुन-झुनसँ बढ़य धड़कनमा
गोरकी नजरि मोर हरि लेल परनमा
झलक देखाए एक चलि गेल सजनमा



कतसँ करू शुरू



कतसँ करू शुरू
कोना क' हम पढ़ू
एसँ करु की बीसँ करु की
सीसँ करु ओ गुरू .... !
१
कारी अक्षर भैंस बराबर
हम कहियो नइँ पढ़लहुँ
हेमा मालिनि ओ धर्मेन्दर
सभ सिनेमा देखलहुँ
छोड़ू पढ़ाइ ई बेकारके लड़ाइ
डिस्को डान्स करु .... !
२
घूस जे खाइअ मौज करैअ
और चढ़ैअ कार
बूड़बकसभ कुर्सीपर बैसल
बुधिबला लाचार
कुर्सी चाही त फूर्ति निकालू
तरबा खूब रगडू .... !

३

बिना रूपैया बाप नै मैया
आओर ककरा की कहब
बूधि अहाँक पड़ले रहत
सभसँ बूड़बक रहब
छोड़ू ई मान उठाउ समान
स्मगलिंग करू शुरू......... !

(प्रस्तुत गीत हमरा अन्दाजे १९८६क अछि । बच्चासभ अंग्रेजी ज्याम्स् गाबए । कहलिऐक मैथिली गीत सेहो सीखू । कहलक जे मैथिलीमे एहन गीत छैक ? आ तँए ई लिखकए गाओल । बादमे हमर अनुज मतीश चन्द्र लाल अपन दहेज टेली फिल्ममे रखलन्हि । "दहेज" मैथिलीक पहिल टेलीफिल्म अछि ।)



नाल-खण्ड



हमर शहर बहुराएल अछि ... ...



हमर शहर बहुराएल अछि
बेहोश भ' अहुँराएल अछि !

१.
बेगिन्ती बेहाल बेकल
बेढंगी बेजान बेचल
बेकार बेताल बेधल
बेमेल बिचित्र जिनगीसभसँ
गूँथल लेपटाएल अछि
गत्र-गत्र ओझराएल अछि !
हमर शहर बहुराएल अछि
बेहोश भ' अहुँराएल अछि !!

२.
भोरेसँ कारी अन्हार
सभतरि आलसके पथार

दोसरेपर दारोमदार
मुँह तकैत देहसभसँ
भरल सठिआएल अछि
बक द' बकभ्फाएल अछि !
हमर शहर बहुराएल अछि
बेहोश भ' अहुँराएल अछि !!

३.

होससभ बहुतो
बेहोसक काँड़तर
तरेमे पिचाएल अछि,
जड् बोझक भारक
दबाबसँ दबाएल अछि
उठैत हुंकारोसभ तरेमे
कुहरैत बरबराइत झोलमे
मिझराएल हेराएल अछि !
हमर शहर बहुलाएल अछि
बेहोश भ' अहुँराएल अछि !!



मनुखमारा

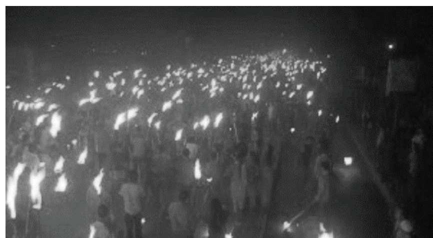


मुसहरकेँ मुसहरे राखह
देखह खूब निहारि !
लिखह, फोटो खिचह
मांगि-चांगि क' भीख दहक
आ करह जमओरा भारि !!
आहि रोऽऽऽ !
ओकर अस्तित्व त राखए पड़तैक !
लेखमे, गोष्ठीमे, सभ्य कहबैकाक कोठीमे
अपन पारम्परिक विविधताक
बखान तँ छाँटए पड़तैक !!
जा हो ऽऽऽऽ !
माउँसक सट्टा
के खएतैक मूसक ओ तरकारी खट्टा ?!
तामए-तूमएक लेल फेर
आओत कतएसँ मुसहरबा पट्टा ?!
दुर्रऽऽ जो !

सभकेँ बढ़ाइए लेबह,
उपर चढ़ाइए लेबह,
घर-घर पढ़ाइए लेबह
त,
पर्यटक ने घटि जएतह,
सहयोगक लड़ी कटि जएतह,
खोज-अनुसन्धानक विषय
सोझे ने सठि जएतह !
आ,
कोन मुद्दा उठएबह ?
कोना क' मुद्दा फेर भजएबह !
बड्ड संघर्षशील छह से
कोना क' लोककेँ देखएबह !!
कतएसँ अएतह नारा ?
मुसहरक नामेँ खाएक चारा !
कोना क' बहतो बजेटक धारा !!
ओ त मारैत अछि मूस
ताँ कोना बनबह मनुखमारा ?!!!!!



ल' अग्निशिखा रेड़मे



शहीदक ठन्ढाएल खूनके बुन्नसभ
शहीदकेँ पिओने मायके थुनसभ
शहीदेकँ भजबएबला
बेइमनमाक देहमेके नूनसभ
देखिहह फेर तरतरा रहल छैक !
एखन भलेहिं सुसुमे होउक
मुदा तरे-तर गरमारहल छैक !!

१
सोचैत अछि, के कथी कहत ?!
कहिये क' कथी करत ?!
लाज त अछिए नइँ
त मनमे की गड़त ?!!
शहीदक खूनके एकटा ठोप लगा लेबै
लोकेके कीनल फूल दूटा चढ़ा देबै
द' क' घरबैयाके किछु मालपानी
अथवा कतहु कोनो नोकरी लगा देबै
आ फेर चुनाओमे सूदि संग भजा लेबै !!

२
ओ खून भेल,
जहान लेल ?!
आ की ककरो मकान लेल ?!
कमायके दोकान लेल ?!

३

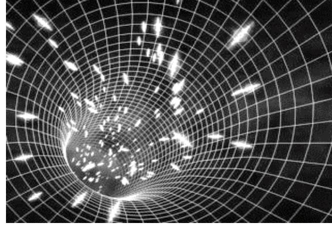
ठीके शहीद,
मरि गेल, गड़ि गेल, जरि गेल,
रक्तबीज बनि मुदा
अछि ध्वज-झुण्ड गढ़ि गेल !
उठत लग्न बेरमे
ल' अग्निशिखा रेड़मे
अगिया देत भसिआ देत
गन्हकीक सड़ल ढेरमे !!

४

सुस्ताएल छैक
लजाएल छैक ।
मर्मपर पड़ल छैक चोट
तैं एखन छितराएल छैक ।
मुदा, सुनह श्वानसभ
भीतरसँ सभ गरमाएल छैक !!
उठत फेर ज्वार जे
चिथड़ी बनत श्वेत-खोल
कलपा देतैक तब कालक्रम
पत्र-पत्र खोलैत पोल !!!
शहीदक ठन्ढाएल खूनके बून्नसभ
शहीदकेँ पिओने मायके थुनसभ
शहीदेकेँ भजबएबला
बेइमनमाक देहमेके नूनसभ
देखिहह फेर तरतरारहल छैक !
एखन भलेहिं सुसुमे होउक
मुदा तरे-तर गरमा रहल छैक !!



समय



समय बलवाने नहि
सर्वशक्तिमान अछि !
सोझ सरलरेखामे
सोझे गतिमान अछि !!

सदिखन समान गति
समरूप बिनु क्षति
सोझे गतिमान अछि !
सर्वशक्तिमान अछि !!

समयकेर भूत नहि
सूतल भविष्य नहि
सदा सर्वदा ई
सिद्ध वर्तमान अछि !
सर्वशक्तिमान अछि !!

समय सुतत नहि
संग कतहुँ जुटत नहि
स्नेह नहि राग नहि
सटल उपराग नहि
समये निराकार
सभतरि समान अछि !
सर्वशक्तिमान अछि !!

समयकेर कर्म नहि
सत्धर्म अधर्म नहि
समय ने घोर अछि
समाधि ल' अघोर अछि
स्थान नहि प्रस्थान नहि
सभतरि सभठाम
विराजमान अछि !
सर्वशक्तिमान अछि !!
सन्त अछि
सन्ठ अछि
साबित अनन्त अछि
सभतरि अस्तित्व मुदा
साफ अन्तर्ध्यान अछि !
सर्वशक्तिमान अछि !!

सद्‌गतिक लय तक
सृष्टिक प्रलय तक
स्वयं अपन जन्मसँ
सत्य परम ब्रम्हसँ
सदैवक आरम्भसँ
साँचे विद्यमान अछि !
सर्वशक्तिमान अछि !!

समय बलवाने नहि
सर्वशक्तिमान अछि ।
सोझ सरलरेखामे
सोझे गतिमान अछि ।



ढोलक !



ढोलक !
लटकल छैक
टाङल छैक
टाटक कोन्हमे
ठोकल खुट्टीसँ
बान्हल छैक !

उत्सव लेल
भजन-कीर्तन लेल
ककरो जनममे
त कहियो ककरो मरणमे
कहियो रिआज लेल
कहियो रिवाज लेल
कहियो आनक तुष्टि हेतु
कहियो अपन संतुष्टि हेतु
उतारि लैत छैक
नाथसभकेँ कसएलेल
ससारि लैत छैक
तरहत्थीसँ ठोकि-ठाकिकए
बोल ओकर पन्हारि लैत छैक
ध' क' दबाए जाँघतर दुनू हाथेँ पीटि
गुम-गुम गुमका लैत छैक !
आ बस तकरबाद
फेरु ओही खुट्टीपर
ओही कोन्हमे
फटलाहा गुमसल बोरा ओढ़ाए
अन्हारमे लटका दैत छैक !!



जखन तक ई जिनगी



जखन तक ई जिनगी
कोई नाथ नइँ अनाथ छी
ई मन हमर ई तन हमर
तैँ अपने जनके साथ छी !

जे छिना गेल से छिना गेल
ओ शून्येमे ने लिला गेल
जे हाथ आएलओ जाएत कतए
जौँ अन्ते त सभ ने बिला गेल !

शून्ये त सत्व अछि
शून्यमे अस्तित्व अछि
अस्तित्वकेर आधार शून्य
शून्य सार तत्व अछि ।
जखन तक ई जिनगी
हम मशाल त जरा रहब
प्रकाश सेहो शून्य अछि

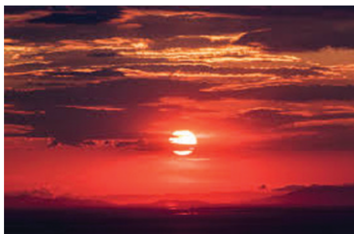
मुदा अन्हार भगा रहब
जनैत छी, अन्हारो शून्य
तथापि शून्य सजा रहब
शून्येसँ ल' क' शंख हम
कूदि-कूदि बजा रहब !

जनैत नइँ छी आओर किछु
अधीनता थर्रा रहब
लय रहत इएह सदति
ढोल इएह बजा रहब
ढोल इएह बजा रहब !

जखन तक ई जिनगी
कोइ नाथ नइँ अनाथ छी
ई मन हमर ई तन हमर
तैं अपने जनके साथ छी !



ई सुरूज देखू अस्ताइत



ई सुरूज देखू अस्ताइत
तैं गमे-गमे अछि पताइत
चमका चमकाकए मेघक झोंज
अछि बीच-बीचमे फेकैत ओज ।

बिहुँसल मलिन आ शान्त धरा
स्वीकारैत विधि विधान खड़ा
बनि मूक तिमिरमे लपटाइत
तैं गमे-गमे कने सकुचाइत ।

काल्हि हेतैक निश्चित भोर फेरो
चीरैत तिमिर चहुँओर फेरो
भरि रातिये भरिक त भीड़ ई
हँ, उर्जा आओत बनि ताप फेरो
हँ, उर्जा आओत बनि ताप फेरो ।

ब्रह्माण्डमे पिण्ड अछि यत्र-तत्र
नव सृजन सक्षम इएह धरा
कह मृत्युलोक लोभाइत मुदा
सभ देवो दै छथि दृष्टि गरा
बदलल नइँ धरती नइँ बदलत
राखत सभ युग ई गरा-परा
हँ, राखत सभ युग गरा-परा !



खोजि रहल छी... ...



खोजि रहल छी
अपन धरती
अपन हेराएल
अपन ओ धरा
दूर एक छोड़पर
ठाढ़ ठकुआएल
अलगे एकसर अड़ल ठड़ा !

सभ किछु आओरमे नइँ
अपन धरतीमे मय छल
कए रहल धरतीयेक जय छल
धरतीयेक छलैक सभ किछु
सभ कर्म-अकर्म, हर्ष-संताप
उत्साह-भयक कथा आ व्यथा
धरतीयेक मनोरम संगीत छल
अपने लयमे गबैत गीत छल ।
मुदा आब, ई धरती
कहियो किछुमे
त कहियो किछु आओरमे
मय भ' जाइत अछि
कहियो ककरो
त कहियो फेर ककरो

चिचिआकए जोर-जोरसँ
जय क' जाइत अछि ।

कहियो लोकक आधार
ई धरती
आब त रहि-रहि क'
कहियो एम्हर
त कहियो ओम्हर
देखिते-देखिते
बहि जाइत अछि
कहियो अनुलोमपर
त कहियो विलोमपर
पोतैत अपन सौरभ
देखबए लेल गौरव
गछि जाइत अछि ।
रहि-रहिकए
बदलि जाइत छैक रंग
ललोइन करिआ जाइत छैक
भाइत त किन्नहुँ नहिये हएतैक
मुदा तैयो नइँ जानि किया
दुरूस्त विश्वास भरल आँखियोमे
जवर्दस्त भ्रमक जाली
जलिआ जाइत छैक ।
खोजि रहल छी
अपन धरती
अपन हेराएल
अपन ओ धरा
दूर एक छोड़पर
ठाढ़ ठकुआएल
अलगे एकसर अड़ल ठड़ा !



तप ?!



कहाँदोन तप !
कथी ले ?!
अनेरे जान भफाबए लेल ?
बेसाहि आओर पीड़ा
अपनाकेँ उलाबए लेल ?!

ब्रह्म कोनो 'राज्य' छथि
जे चाटुकारसँ फूलि जएताह ?
सूनि स्तुति अपन
मस्त भ' ओ भूलि जएताह ?
हास्य आ विनोदसँ
प्रिय जकाँ की खूलि जएताह ?
वा अहीँक जिद्दपर
मिसरी बनि घूलि जएताह ?!

'जीवन' कोनो कैद नहि
जे 'मोक्ष' लेल मरैत फिरी !
'कर्म'केँ कात कए
ल' नाम धर्म सरैत फिरी !!

तप जौँ संघर्ष अछि
त फाँड़ अपन आउ बान्हू
लक्ष्यकेर भोग लेल
कर्मेटा अछि 'धर्म' मानू !
बाँहि जखन कैसि जाएत
स्वेद श्रमेँ झरि जाएत
अमृतेँ गर तर हएत
'रहस्य'क से तथ्य जानू !!



धैर्यवान लोक !



जाइ छी
जा कऽ घूरि जाइ छी
किछु नहि होइत अछि
किछु हएबो नहि करत
केओ नहि सुनैत अछि
केओ सुनबो नहि करत
हमरे नहि ककरो
किछु नहि होइत छैक
कहिओ हएबो नहि करतैक !

ओतए जे बैसल अछि तकरोसँ
किछु नहि होइत छैक
किछु करहु नहि सकत
ओहो अछि मनसुक्खे
सभ दिन अहिना रहत

ओकरा अपनो लेल
कहिओ किछु नहि हएतैक
कहिओ ओकर अपनो
पेट नहि भरतैक !

मुदा जाइ छी
जा कऽ घूरि जाइ छी
तैयो जाइते रहब
आ घूरि क’ अबिते रहब
सभ दिन अहिना
नहि जानि कथी ले
दुःख दबओने
मन सुखओने
सभ किछु सहिते रहब !

कहाँदोन हमसभ
हमर गामक
एहि परोपट्टाक
एहि माटिपानिमे
लेढ़ाएल लोकसभ
सहनशील अछि
शान्तिप्रिय अछि
समर्थ भलें नहि होए
धैर्यवान जरूर अछि !



चुप्पी



हमहूँ चुप
अहूँ चुप
चुप्पीए आवाज अछि,
निर्लज्जक सामना करैत
गीतक अपन साज अछि !
चुप्पी जौँ दृढ़ता त
उर्जा अवश्य उगलत ई
भेद करैत भेदियाक
बुर्जाकेँ ढाहत ई ।
बढ़ैत रहू लक्ष्य दिशि
छोट करैत बाट कठिन
पहुँचए लेल थानतक
इएह महीन राज अछि !



आह !



चाही सन्तान
सुन्दर भविष्य
प्रगति आ विकास
मान आ पहिचान
मुदा दर्द नहि होए
कतहु किछु कनेको
नोचाए नहि दुखाए नहि
लड़ए-भीड़ए नहि पड़ए
केओ पड़ोसमे उठए
लड़ए भिड़ए मरए
आ सुतलो रही त
उठाकए हाथमे स्नेहसँ थमा देए !
आह !!



चलू, राति बिति गेल !



सपना त टूटि गेल
चलू, राति मुदा बिति गेल !
काल्हियो कोनो कल्पना क' लेब
हवेमे सही हौआकए
हाथमे किछु मूनि लेब,
सपने ने चाही
त, फेर दोसर बूनि लेब !
काटए लेल राति फेरो रसिआकए
कोनो थीम नया चूनि लेब,
सपनेमे मनसँ पजिओने चाह
शुभ समाचार सूनि लेब !!
सपना त टूटि गेल
चलू, राति बिति गेल !!



के कएलह ई खून ?!



के कएलह ई खून ?
रे कायर, कनियें एम्हर सून !

धोखिया, छली, स्वार्थँ आन्हर
सभ दिन नुकाएले रहैत अछि
मुँह जे भरभराएल आ कारी होइत छैक !
कायर विध्वंशपर
भलेहिं अपनाकेँ भारी सोचो
मुदा तत्क्षण मनेमन
अपने गारिसँ भारी रहैत छैक
दुराचारी रहैत छैक!

करेज जड़ैत रहैत छैक
तिलमिलाकए मरैत रहैत छैक ।
आ तैं त अपनाकेँ कारी लवादामे
धुप्प अन्हारमे नुकओन रहैत छैक !

अधर्मी चटतौक तोरा घुन !
रे कायर, कनियें एम्हर तौँ सून !!



खून त खून छैक !



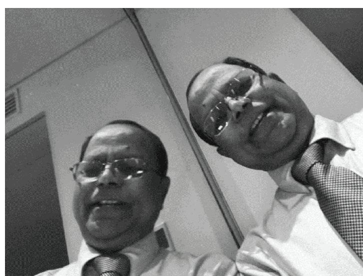
खून त खून छैक !
छूरा भोंकि कए
वा अनेरे झोंकि कए
अथाह अनजान पानिमे
फुसला कए गोंति कए
वा धोखासँ घेंट घोंटि कए
खून त खून छैक !

खून कए खुनियाँ
कतहु भागि जाइत अछि
कतहु क्रूर मुस्कीसँ नहा जाइत अछि
केओ लाश देखि डराइत अछि
केओ लाशेपर मड़राइत अछि
आ अन्तमे लाशक अङ्ग-प्रत्यङ्ग
झुनझुन्ना बना कए बेचि लैत अछि ।
अपन क्रूर करतूतकेँ
लगहरि पन्हिाएल थुन्ह बना लैत अछि
मुदा खून त खून छैक !!

ओना खून त यमदूतो करैत छैक
यमलोकसँ अज्ञेय अदृश्य
आएल रस्से धरैत छैक ।
एहि लोकक लोक त नहि देखैत अछि
मुदा जे कसाइत अछि
सत्ते देखैत हएतैक
न्याय आ अन्यायक लेखा लेल
ओतए फरियाद फेकैत हएतैक
आ खुनियाँक खातामे
ओतए हिसाब जोड़ैत हएतैक ।
एतए भलहिं दुन्न क' लेओ केओ
ओतए ओकर खातामे
चून लागि जाइत हएतैक ।
आखिर खून त खून छैक !!!



अपनेसँ करक अछि बात



अपनेसँ करक अछि बात
सोचैत छी, होइत एक्कोटा झात ।
एक बेर झखितौं अपन रंग
अपने संग करैत हुड़दंग।
हँसितौं, कनितौं, मस्तसँ नचितौं,
सभ हिसाब अपनेसँ करितौं ।
कोंचल-काँचल दबल तहसभ
चौपेति संजोगि क' ओरिअबितौं ।
आ
फेर बाकसमे कोंचि दितिऐक
कसि बिलैया ठोकि दितिऐक !



कहिआधरि ढुनैत रहब ... !



छोड़ू कमला आ कोशी
कतेक बाढ़िक कथा बुनैत रहब,
कटान, ढहैत मकान आ उएह बलानक कथा
कहिआधरि ढुनैत रहब ?!

१

बनल नहि बरक्कत एतेक दिनसँ
प्रकोप आ प्रताड़नाक बादो
बाढ़िमे कहुना जीअलहुँ
बहलहुँ, बढ़लहुँ नहि
उपला कए उढ़रैत माछ खएलहुँ
बाढ़ि बान्हि, पकड़लहुँ नहि
चुप्पे टुकुर-टुकुर देखैत रहलहुँ
बहैत रहलहुँ, सम्हरलहुँ नहि
माथपर हाथ धए कथा रचलहुँ कटानपर
श्लोकपर श्लोक दहाएल माछक तरानपर
लए कोदारि आ बेल्चा कोशी-कमलासँ
न्याय हेतु लड़ए निकलहुँ नहि ।

२

हम महान छी कथामे
अपने जगतमे जनकमे जानकीमे
मण्डन आ विद्यापतिमे
शंकर आ गंग बजबैत छी
बेसाहल पीड़ाकँ तप कहि
चौपेति सैंतिकए खूब सजबैत छी
नव त्वरित गतिक बदला
इतिहासक गतिसँ हाट-बजार चौक चौबटियामे
चिचिआ-चिचिआकए अपनाकँ भजबैत छी
लोककँ मसल्ला भेटि जाइत छैक
भूजि-भाजिकए खा लैत अछि हमरेसभकँ
आ हमसभ, तैयो ढोल फेर उएह बजबैत छी ।
छोड़ू कमला आ कोशी
कतेक बाढ़िक कथा कहैत रहब,
कटान, ढहैत मकान आ उएह बलानक कथा
कहिआधरि ढुनैत रहब ?!



हा ! शिव !!



हा ! भूतनाथ !! किए भूतेके ?
वर्तमानक किए ने नाथ बनल ?!
१
बीतल अछि प्रिय, ने दर्द आनन्द
अछि निष्प्रभाव गनल चूनल ।
हँ, जीवक ई अछि तार जाल
संसार जाहिमे बन्हल थूनल ।!
न्यायक भेल अछि तारतार
अन्यायी दानव धधकल अछि ।
हे आउ, एतए करू भस्म असुर
वर्तमान भूतसँ सनकल अछि ।।
२
हा ! नटराज !!
हर्षँ नाचि रहल ?
विषाद किए ने अहाँ गनल ?!
चाइँसभ हर्षे हँसैत
भूपर नेनपन अछि कनैत ।
जौँ पेट करए हाहाहाहा
संगीत अध्यात्म अछि के जनैत ?!
ने लागत एतए तंत्र-मंत्र
चहुँओर खाधि जे खनल अछि ।

३
हँ, नाचू एतए क्रान्तिनाच
जडसूत्रीसभसँ ठनल अछि ।।
भाँजि त्रिशूल आब अन्त करू
सभ विभेद एतए जे जनल अछि ।
तब नाचू नटवर आदिनाच
यदि जन प्रसन्न आ जमल अछि ।।

४
हा ! रूद्र !!
किए ई रौद्र रूप ?
अभियन्ता किए ने नाथ बनल ?!
सृष्टि भेल फेर गड़बड़-सड़बड़
एतए झूट्ठा लूट मचओने अछि ।
जे काटि-खोंटि गड़ रेटैत अछि
ओ लम्पट खूब जमओने अछि ।।
ई तोड़ब जोड़ब कहियाधरि
ई सृष्टि प्रलयके खेल अछि ?
आउ बनि एतहि अभियन्ता आब
सरिआउ सभकेँ ठेल मति !!

५
हा ! नीलकण्ठ !!
किए विषपान ?!
कण्ठ जरा उपकार किए
जे श्रम करओ से पाबो फल ।
जे छलसँ छिनए दोसरके
ओ छली धँसओ पातालक तल ।।
छोड़ू भांग-धतूर ओ बमभोले
सन्तान एतए अछि बिगड़ि रहल ।
श्रमसँ भगैत अछि, हे शंकर
अघोर भेषमे घूमि रहल ।।
ई विष अछि घूलल जन-जनमे
बनि आउ एम्हर शिव, विषहर ।
लोक सुतए पसीनासँ लथपथ
ई धार बहाउ एतए हर-हर ।।



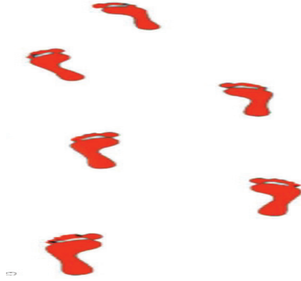
पिंजरा



१
अइ पिंजड़ामे
थकुचल करेज
ने जानि किए
देखि रहल बाट
कथीक कथी लेल ।
२
भोगि रहल
जिनगीक सजाय
हरेक क्षण ।
३
सीखि रहल
आधिभौतिक सीख
अधियात्राक ?
४
केहन अछि
जिनगी आ दुनियाँ
एतक न्याय
केओ दौगैत मस्त
केओ घिचैत सांस ।
५
घिचओ सांस
खाली घिचए लेल
हा ! जिजीविषा !!



थाकल सूतल उठह ने बावल



कांटे कांटमे बढ़ैत डेगसभ
माटि रक्तसँ भिजैत जाइत अछि ।
लाल रक्तसँ क्रुद्ध धरणी
पाथरक डेग गढ़ैत जाइत अछि
पाथरक डेग गढ़ैत जाइत अछि ।।

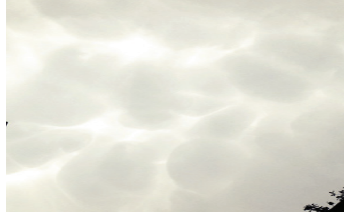
संकल्पेँ अछि तनल छाती
खार पसीना खसैत जाइत अछि ।
लाजेँ लज्जित कंटक सीवन
सटकल सुटकैत गलैत जाइत अछि
सटकल सुटकैत गलैत जाइत अछि ।।

यात्रा ई अविराम निरन्तर
बैसल जे से पड़ैत जाइत अछि ।
चढ़ू, खसू इएह अछि जीवन
चढ़त उएह जे बढ़ैत जाइत अछि
चढ़त उएह जे बढ़ैत जाइत अछि ।।

सपने आएल ने कतहु सफलता
वृथा दम्भ त सड़ल जाइत अछि ।
थाकल सूतल आब उठह ने बावल
पल-पल समय जे चढ़ल जाइत अछि
पल-पल समय जे चढ़ल जाइत अछि ।।



धीप जाइछ धरती



धीप जाइछ धरती
गुम्म गरम बसात
बाट आ कोन्टासभ
जखन थुना जाइत अछि
मनु की आकाशो
गुमसि जाइत छैक
हहाकए फाटए लेल
फुलकी जकाँ
फूलि जाइत छैक
आ गरजैत आक्रोशमे
बरसाबए लगैछ
पाथर-पानि
बुझाइछ आकाश
फाटि जाएत
कतहुँ ठनकैत
फाटियो जाइत छैक
मुदा क' दैत अछि
शीतल शान्त
गुम्मी खोलि दैत अछि ।
एकटा क्रान्ति भ' जाइत छैक
काल भलेंहि अल्प होउक
सुखद किछु बदलि जाइत छैक !



अशीर्षक



पटैक देलक इहलोकमे जखन
अनभुआर देखल चहुँओर
टूटिते तार बिछोहक क्रन्दन
नयन जूड़ल तखन ने नोर !
चलैत रहल धरतीकेँ दबओने
पटकैत पएर मचओने शोर
आइ पड़ल खसल धरापर
शिथिल हाथ आ दुनू गोड़ !!

सुन रे बहुरा, उद्योगे जीवन
जीत हार अछि राति आ भोर
अन्त परम तत्व उएह यात्रा
चारु नाल धरेके कोर !!!



‘मुसहर’के हम बच्चा छी !



हमरा ‘दलित’
कहए ‘स्खलित’
‘मुसहर’के हम बच्चा छी !
अपन ‘नाम’
अपन ‘गाम’
नाजे नचैत हम ‘सच्चा’ छी
‘मुसहर’के हम बच्चा छी!
‘श्रम’ अछि ‘कर्म’
आर ने ‘धर्म’
कोनो ने ‘भ्रम’
कनिको कतहु ने ‘कच्चा’ छी
‘मुसहर’के हम बच्चा छी !
मस्ते ‘मस्त’
उड़ओने ‘कष्ट’
माटिमे महकैत ‘गुच्छा’ छी
‘मुसहर’के हम बच्चा छी !
हमरा ‘दलित’
कहए ‘स्खलित’
‘मुसहर’के हम बच्चा छी !



बेतरासल हीरा



कहैत त लोक हीरे छैक
मुदा, जौहरीसँ दूर अछि !
प्रीति छैक अप्पनसँ
अपन बन्धुसँ
कारी गर्दसँ
आ तैँ त
कारी कोइलाक ओ नूर अछि !

छिटकाकए केओ
ल’ न नइँ जा सकैक
कसिआकए सटल अछि
मातासँ
अपन जन्मदातासँ
सहोदर-सहोदरा भ्रातासँ
ओ त अप्पनके हूर अछि
कारी कोइलाक ओ नूर अछि !

एना नइँ जे
तरासल जएबाक कहियो
मन भेल नइँ होइक

भ' चमकसँ लैश
चमकक ललक
नइँ गेल होइक
मुदा ओसभ त
छीलि दैत छैक
सोहिकए छातीसँ हृदयकेँ
अपन खूनक सम्बन्धकेँ
गींड़ लैत छैक,
उठाकए अपन धरतीसँ
दूर कोनो गरमे
लटकल हारमे पीर दैत छैक !

आ तैँ त
ओ अप्पनके हूर अछि
कारी कोइलाक ओ नूर अछि
कहैत त लोक हीरे छैक
मुदा जौहरीसँ दूर अछि !!



बीआ संघर्षके



१
लोक तंग अछि - !
कोइ मारसँ
कोइ भरमारसँ
कोइ लाचार अछि
नियतिके पछाड़सँ
कोइ एतए गणेशाकार
अपन भाग्यके बौछारसँ !!
२
दुनू नंग अछि - !
कोइ मजबूरीमे
कोइ भरल पूरीमे
कोइ विधाता कोसैत अछि
कोइ अपने पीठ ठोकैत अछि !!
३
की करब - ?!
जिनगी भरि कानब?
कोसैत दोसरकेँ
दु:खेक कथा सानब ?
ढोइत रहब मोटा
करमक फल मानब ?!
४
आ की - ?!
उठि ठाढ़ भ' तानब !
बीआ संघर्षके
छिटएके ठानब !
बीआ संघर्षके
छिटएके ठानब !!



नारी



नारी त प्यारी सभकेँ
हे नारी, किए भुला रहल छी ?
सोचि दबओलक दबा देत फेर
अपनेकेँ किए दबा रहल छी ?!

नारी ने उर्जा भारी !
जनति जीवन जे अछि जीवन,
बिन नारीके जनत जगमे
व्यर्थे शीश अहाँ नवा रहल छी !!

सत्य अहीं छी, शक्ति अहीं छी
सृजन-पालनसभ चला रहल छी !
जगितेँ जगकेँ जगा-जगाकए
क्षितिजकेँ रंगेँ सजा रहल छी !!



ई जिनगी



नहि जानि ई जिनगी
यात्रा वा विश्राम थिक
कि उबजल समयकेर
कालखण्ड महान थिक ?!

चलैत रहल चलैत रहब
रूकब कहाँ अछि हाथमे
गतिये गन्तव्य अछि
इएह एकर गान थीक !

संग-साथ क्षण-क्षण
स्नेहक उमंगमे
उल्लाससँ बढ़ैत रही
जिनगीक इएह जान थीक !!



हँ, हँ ठीके छैक



हँ, हँ ठीके छैक
जे छैक से नीके छैक !

चेन्ज करू चेन्ज करू
बड़का काजमे लागल छी
धन्य मैया आ धरती जे
सद्दे अहाँ जागल छी !
हँ, हँ ठीके छैक
जे छैक से नीके छैक !

थिथुरल सिकुड़ल लोककेँ
बदलक मधुर नारा अछि
नुकाएल एहि नरेमे
अवसरकेँ जे धारा अछि
हँ, हँ ठीके छैक
जे छैक से नीके छैक !

बँटैत बात
त्याग, तपस्या आ मुक्तिकेँ
पँजिआबक जुक्तिमे लागल छी
जेना-तेना जतए भी हो
कहुना सटए लेल भागल छी ।

करो किछु
बहरो मनसँ माला अहींक जपैत रहो
सभक सामने अहींक स्तवनसँ
लोक अहाँकेँ झँपैत रहो ।

हँ, हँ ठीके छैक
जे छैक से नीके छैक !



जीवन सपना



किछु सपना एहन होइत अछि
ने छोड़ैत अछि ने जोड़ैत अछि ।
निन्नमे आबि मुदा देखू
नव आश जीवनमे कोरैत अछि ॥

जौं टूटि जाइछ जीवनधारा
सपने जीवनकेँ ढोइत अछि ।
कहूँ लोरीसँ कहूँ होरीसँ
जीवनके सपना धोइत अछि ॥

मगन प्रेममे सपनामे
कहूँ खिलखिल क' मुस्काइत छी ।
कहूँ डरसँ थरथर कनैत-कनैत
कहूँ तपमे खूब भफाइत छी ॥

सपना जीवन कि जीवन सपना
ई भेद बड़ अछि भेदी भैया ।
ने एतए नाओ मझधार विकट
ने ओतए केओ अछि खेवैया ॥

चलू सपनामे जीबू मनसँ
जीवन सपने सन भ' जाओ ।
ई सुख दर्दकेर सागरमे
दुनू अपने सन भ' जाओ ॥

ने भेद रहए सपनासँ जौँ
जीवन अनन्त भ' जाइत अछि ।
ने रहैछ तखन सीमा बन्धन ।
ई 'हम' दिगन्त बनि जाइत अछि ॥



सीख !



सभ बैसल रहैक
मण्डली जमल रहैक ।

ओ अएलाह
शुभ सन्देश लएलाह
स्निग्ध स्नेहिल शब्दमे
ज्ञान, दान आ मानक
बात कएलन्हि
बहुत सिखओलैन्हि
नीकसँ पढ़ओलैन्हि ।
इतिहास आ वर्तमानमे
वांछित परिवर्तनसँ
परिचित करओलैन्हि ।

मन गदगद छल
ओ 'एक्के मिनट'
नहुँए बुदबुदओलैन्हि
प्रेमसँ बाँहि पकड़ि
एकान्तमे धकिओलैन्हि
आ हाथमे एक गोटे
मुद्दा थम्हओलैन्हि ।

मुद्दाक मिसिल छल
हुनकर गील आँखिमे
अपने पक्षमे फैसलाक
याचना आ जिकिर छल !



चुप्प छी



चुप्प छी
चुप्पी लेल
डरसँ
जे केओ
सुनि ने लेअए
हमरा लेल दोसर दिन
खोजिकए
केओ चुनि ने लेअए ।
चुप्प छी
चप्पी लेल
बाजिकए हएत की
कोन बाजी
मरा जाएत
सुनत ओ
जे हमरे सन अछि
जकरा सुनक चाही बहीर अछि
स्वर हमर
हेरा जाएत !



स्टेपनी



ठेकेदारक गाड़ी महक
स्टेपनी पहियापर
गुड़कि-गुड़किकय
घूमि रहल अछि
एक गोट हैलमेट !
ओहो अछि फाजिल
स्टेपनी हैलमेट
नहि जानि कतए
गाड़ी फेल भऽ जएतैक !
आ फाजिल मोटरसाइकिलमे
ओकर जरूरत पड़ि जएतैक !!
ठीक ओहिना जेना
बॉसक स्टेपनी अपनासंगे
एक गोट गुड़िया लऽ जाइत अछि
बॉसक उपस्थितिमे
दूतसभकेँ रिझबए लेल
बॉसक अनुपस्थितिमे
गणसभक नहसँ
अपनाकेँ बचबए लेल
अपन जान जोगबए लेल !

की करबहक भाइ,
अहिना होइत छैक !
ई स्टेपनीक जमाना छैक !
स्टेपनीकेँ सेहो स्टेपनी चाही !!



एकटा दृश्य



पूजेगरीक दाँत खिलखिल
मेमक गाल खिलल अछि
तामझामसँ पूजा-आजा
दक्षिणामे गड्डी मीलल अछि !

मन्दिरक दुआरिपर बुधनी
अङ्गोठने कर जोड़ने अछि ठाढ़ि
हे भगवन, कहुना पाँचो रूपैया
हमरो एहि पिचकलहा बाटीमे झाड़अ !
नइँ जानि की भेल पाप-दोष
दू दिनसँ पेट रीढ़मे सटल अछि
माय-बाप राज्य आ भाग कथिलैं
सभ हमरेसभसँ एना कटल अछि !
कटियो जाइत भूखो आ जिजीविषा
मुदा देखू ने ई निरमोही प्राण
कसिआकए कोना सटल अछि !!



महान छी ?



हमसभ महान छी
सभ गुणक खान छी
वीरताक शान छी
सूर्य आ चान छी !

विदेशीक हजुरीसँ
गुलामीक मजुरीसँ
यौन आ घघरीसँ
चलैत अछि जीवन
देश आ सत्ता
आ ओकरा ढोअएबला पजेरो 'पावर'
सोम, तास आ लालीसँ रास
आ ओहि लेल जरूरी अट्टालिका 'टावर' !
नीक त नहि लगैत अछि
मुदा चलत कोना देश
कोना रहत महान
ई गौरव, भाषा आ भेष

काल्हिए खेहारि देत
लोहछाकए मारि देत
भण्डासभ फूटि जाएत
राज अपन लूटि जाएत !

तैं अहिना चलैत रहओ
गौरवगान गवैत रहओ
इएह त अपन जान छी
खिलखिलाइत दाँतक
असली परान छी
आब अहाँ बुझलहुँ
जे केहन बैमान छी !!



सहमति



आब सभ किछु
सहमतियेसँ बनि पाओत ।
हाकिमो आदेश दोषीपर
सहमतियेसँ द' पाओत ॥
ने हएत कहिओ सहमति
ने एतए किछु भ' पाओत ।
आब सहमतियेसँ बन्धु
असहमति बाहर आओत ॥

सहमति माने सत्ता ।
आओरसभ गुलामका पत्ता ॥
आब बस सिण्डिकेटक सरकार ।
बिसरि चलू संघ अधिकार ॥

लगाउ भाग, बनाउ कुडिया
पिण्ड अंशे सहमति द' पाओत ।
आब आओर नहि किछु बन्धु
बस इएह एक एजेण्डा रहि पाओत ॥



फादर्स डे



फादर-मदर म्यूजियम आइटम
बरस दिनमे पोछी धोइ
फेसबूकमे गोर लागिकए
सोंझाँ शूलक बिआ बोइ !

आओर 'डे'मे बसियो आफत
'फादरडे'मे दिऔ मिठाइ
'मदरडे'मे नीकनिकुत आ
पूरे साल खूब खिंच-खिंचाइ !

भ' सकए, कहिओ ने भेंटू
कुरियरसँ करिऔ प्रणाम
अछि आशीष धन्य पूतजनसभ
रहू चिरंजीव फैलओ नाम !



बात त वएह छैक



बात त वएह छैक
जे छैक सएह छैक !

हृदयकेर स्पन्दनमे
तरंगक क्रम बन्धनमे
नुकाएल गुहाँगञ्जनमे
नोर बहैत क्रन्दनमे
गहींर आ अथाह छैक !
बात त वएह छैक
जे छैक सएह छैक !!

की पुछब हालचाल ?
एक-दोसरक मुँह देखि
सभकिछु ठेकानि लिअ
कहुनाकए हँसि-हँसिकए
मनेमन कानि लिअ
नाटकपर जीवन नहि
जीवनपर नाटक आब
चारूभर छाएल छैक !
बात त वएह छैक
जे छैक सएह छैक !!



दौगैत दलान छथि !



राजनीति अछि मैला

नेतृत्व एकर पिलुवा
सरल महकैत गन्धमे
बास बसल घिनुवा
के करैछ जन लेल ?
सभ स्वार्थें अछि लिलुवा !
भन-भन भिनकैत एतए
धत् ! डटल घिनुवा !!

बुद्धिजीवी ज्ञान छथि
स्वच्छताक खान छथि
उद्योगी उज्जर धवल
पूर्णिमाक तैं चान छथि ।
जन-जन जीविकाक
वएह बरहम थान छथि !

सेवक छथि कर्मचारी
समाजक ओ शान छथि
संस्थाक समाजसेवी
त जनताके जान छथि !
आओरसभ जे -कार छथि
महान छथि
लोकवेदक ने जहान छथि

तैयो, बनए लेल नेता
मुदा किया एतेक हरान छथि ?
देबए लेल सभ किछु
दौगैत दलान छथि ?!



आह, रूपैया !



आह, रूपैया !
वाह, रूपैया !!
१
बिनु संघर्षेँ
जीति गेल रूपैया
चलैत अछि उएह
आओरसभ थैया-थैया
आह, रूपैया !
वाह, रूपैया !!
२
बँटैत नोनगर
कड़गर झिल्ली
चारू भर सभकेँ
उड़बैत खिल्ली
मारैत मुस्की
पुचकारैत पिल्ली
आह, रूपैया !
वाह, रूपैया !!
३
एकहिटा नहि
सभ किल्लापर
छपने अछि चारू भर
सभ बिल्लापर
कोनो मठ-मन्दीर
बाँकी नहि जिल्लापर
सभ ने रसाइ अछि
रस-मलाइ मिललापर ।
आह, रूपैया !
वाह, रूपैया !!



तैँ त .... !



दयावान दयालुसभ दुर्दिन दिन जनक
परातैँ भनैँ बिसरि जाइत छथि,
दशा देखि दानव, दानवीय प्रवृतिक
धड़फड़ा सोझैँ पिघलि जाइत छथि
अखोर असुरक अन्त्य आ अगिजरीपर
करैत किलोल छटपटाकए उतरि जाइत छथि !

दुद्धा दासवत् दृष्टिक कारणैँ
स्मरण सतहपर स्वार्थक लेढ़ लेपाजाइत छैक
लिलज्ज ललसाक लारक लस्सेमे सभ किछु
लसाकए लढ़िया जाइत छैक आ
लक्ष्यक लगारी लजाकए लजौनी जकाँ
लड़बड़ लड़ताङ्गर भ' लतड़ि जाइत छैक !

विवस्त्र विघातक विषाद
विदीर्ण विनष्ट विस्मृत भ' जाइत छैक
विद्रोह विप्लवक वह्नि विकलाङ्ग भए
ऊकक उष्म ऊर्जाक ऊर्मि
उसाँसैत उतरिजाइत छैक ।

स्वप्न सङ्गाहासँ संग्रामक सतरंगा
सनिचराक सटने
सकपकाकए सटकि जाइत छैक
परिवर्तनक पाँखि पनिमराकए पङ्गाजाइत छैक
परिभव परिहाससँ प्राप्त परिणाम पराजाइत छैक !

तैँ त हम चूसल जाइत छी !
माला लेल ककरो सदि गूँथल जाइत छी !!
मोड़ि-मड़ोड़ि मसोड़िकए
कात-करोट कोन्टा-कोन्हमे कलालसँ गोड़ल जाइत छी !!!

●

हिमपात



चारूभर पसरल अछि
नील नभक स्नेह
श्वेत पुष्प-रेणु
लजाएलि धरती
ओढ़ि लेलकि
निर्मल चादरि ।
स्पर्श शीत
तैयो गरमा दैत छैक
बसन्त अछि लग
से बता दैत छैक !



धर धर रे !



धर धर रे !
चोरबा पकड़ रे !!
बहबै छी पसीना हम
आ ई
सरबत करै छौ तर रे !

धर्मसँ नीतिसँ
खसल जड जीनके
मनुखक गिँड़ जमल घीनके
लतिआ थर्र कर रे !

हमरे ताकतिसँ रंगल सियार ई
हमरेपर करैत अछि निठुर प्रहार ई
मातल कातिल बनि
आएल एहि हीनके
फूसिए के अहं एकर
फारि चर्र कर रे !

भीख दानपात्रसँ
चोराए ई पिबैत अछि
आब एकर निशाके
तहिया तर कर रे !

बक बक
बक बकाइअ
भूट्ठे भक भकाइअ
भूट्ठा के फरेबी ई
बोल हर्र कर रे !



जीतक गंग 'अछि बहि रहल



देखारहल अछि ओ रंग
खोल आब सरकि रहल छैक ।
बदलि रहल अछि बोल
पोल आब महकि रहल अछि ।।
जंग अधिकारके
वजूदके सम्मानके
संग जूटक ढोल अछि बजि रहल ।
सत्यके संघर्ष अछि, लड़िये कए भेटत ई
बढ़ैत चलू जीतक गंग अछि बहि रहल ।।



हमर शहर



गरदे गरदा,
धुएँ धुआँ
धोन्हिएँ धोन्हि !
इएह थीक परिचय
हमर शहरके !!

आ इएह
अछि परिचिति
हमर घरके
हमर हन्नाके
हमर खाटके
हमर छाती
आ साँसके !
ससरैत-चलैत
एतक सभ लाशके !!
पिच्छरमे पिछड़ैत
एतक दर्शनके !
बकुआएल संघर्षक घर्षणके
बाध्यतेँ आँखि मुनने ब्रह्मलीन
माथसभक मान-मर्दनके !!
नइँ जानी

हमर पूर्वज की कएलनि
किछ सहज रहनि
तैँ मरलनि वा जीलनि !
हमसभ पिचाएल छी
मशीन जेना पेंचने होए
पेंचाएल छी
छुट्‌ने ने छुटए
परएने ने पराए
नेलमे ठोकाएल छी !!

नइँ जानी
हमर पूर्वजकेँ सहज रहनि
कि वएहसभ सहज रहथि ?!
हमसभ त जनमल छी
भेलए लेल भोगए लेल ।
भोगही पड़त भोगि लेलहुँ ।
मुदा ओसभ
जे आएल अछि
अबैत अछि, आबि रहल अछि
आओरो जे आएत
अजान अछि
कल्हुकाक पहचान अछि
अही गरदा, धुआँ आ धोन्हिकेँ
स्वर्ग मानत ?!!
वा अर्थक अन्तरकेँ तानत ?!!!!!



की तोरा लेल ?!



हरेक योजना
हरेक कानून
हरेक नीति
दुर्र बकलेल
की तोरा लेल ?
नहि मालक लेल ।
ई छैक नेपाल
एतए मालक खेल होइत छैक
मालक टाल लगैत छैक
माले भभकाबए लेल
योजना नीति आ कानून बनै छैक !



ठंढाउ, हिड़ला लगाउ !



जाउ ठंढाउ !
पोखरिके भीड़पर
हिड़ला लगाउ !!
१.
बौआ आओत
दिन ताकिकए
संगे लाओत केक,
घुटुघुटुकए
मुँह खुआओत
करब फेसबुक चेक !
जाउ ठंढाउ !
पोखरिके भीड़पर
हिड़ला लगाउ !!
२.
चन्दा मामा दूरसँ
पूआ पकाबथि गुंड़सँ
ओहिना पकाउ,

गामक दलानसँ
थपड़ी बजाउ ।
असगर हँसू
लाइव चलाउ,
बिचकू कूदू
गाल फुलाउ !!
जाउ ठंढाउ !
पोखरिके भीड़पर
हिड़ला लगाउ !!

३.
आ आ रे
खंजन चिड़ैया
नेटबाके अवतारमे,
कुहुर काटे बाबु-मैया
घर-बारीके भारमे ।
रंग सजल बजारमे ।
आ आ रे
नेट चिड़ैया
धरैत अन्हार भगा,
देखा-देखाकए
सुस्त लालसा
भुर्री आँखि सुता !!!

जाउ ठंढ़ाउ !
पोखरिके भीड़पर
हिड़ला लगाउ !!



तोक



तोक !
भोंक !!
ठोक !!!

तोके त छैक
जे छैक से उएह छैक !
तोकेसँ चलैत अछि
तोकेसँ ठेलैत अछि
तोकेसँ खेलैत अछि
तोकेसँ छलैत अछि
तोकेसँ झेलैत अछि
तोकेसँ पेलैत अछि
तोकेसँ बेलैत अछि
तोकेसँ हेलैत अछि

तोकादेशक देश आ
तोकिए बमोजिमके सभ परिवेश
सभ कानूनक सीमा
अहीसँ तोका जाइत छैक !
खूलि जाइत छैक धोती
सभ किछु नङ्टे फेका जाइत छैक !!
कानून लगओने रहैत अछि टकटकी
तोकसँ छाती ठोका जाइत छैक !
व्याकुल रहैत अछि बिधुआएल मन
बीच्चे सन द' सर्रर
तोक भोंका जाइत छैक !!



अजीब अछि !



भूख !
आ भूखसँ भूखाएल दुःख !!
भूखलमे नीक, बेजाय सड़ल-गलल,
अरूआएल-नोनिआएल
मीठ वा तीतक स्वादक सुख !!!
अजीब अछि ।

अजीब अछि पेट !
पेटक सेटिंगक सेट !!
एकर ढोकरी एकर टोकरी
कोनो बैलोन त कोनो गैलोन
आ देखिते पसरैत सुपर इलास्टीक नेट !!!
अजीब अछि ।

कोनो पेट छातीसँ निच्चा
भरिते देह आ छाती जुड़ाबैत अछि
कोनो पेट छातीयेमे
इखे मरैत अछि नीके जरैत अछि

अगतियेक गतिसँ अपनाकेँ भराबैत अछि ।
अजीब अछि ।
कोनो पेटक कर्मे योग
कोनो पेटक धर्मे भोग
कोनो संघर्षसँ भरत
कोनो संघर्षें भागत दोग
अजीब अछि ।

अपन पेटक कुरिऐनी लेल
दोसरक खखोरि लेत
ओकर अपन त अपने
मुदा दोसरक भम्होरि लेत
अजीब अछि ।

सदैत सुँघत हड्डी
देखिते निहारि ससरि लेत
लागल रक्त ठोरक बीचमे
अपने कीनल मालासँ
फेर चुप्पे छछोरि लेत
आ देखबैत गन्हाइत दाँत
चिल्होरि जकाँ किछुओ बकोटि लेत ।
अजीब अछि !



बिस्फोट

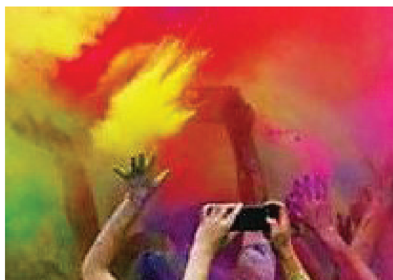


कोंचल गुमसैत
करेजमे बात
घात-आघातक
अनचेतल लात
फटौक नइँ
त की करौक ?
अहीं कहू ओ कतए धरौक ?!

जखन जिनगी जकरा लेल
लोक जरा लैत अछि
चित्थी चढ़ाबए लेल
जखन अपन चित्थी
फरा लैत अछि
उघार भ' जाइअ
त की करौक ?
अहीं कहू ओ की ओढ़ौक ?!



हुड़का



होरीक हुड़दंग
हुड़हुड़ाकए हर्ष हुड़कए,
सर-सर संगी संग
सरसे सरररररर सरकए ।

प्रेमक पथार होए
रसेक श्रृंगार होए
पुलकए अंग-अंग
संगिनीक स्नेह गंग
गुदगुद गुदगुदाए देह
गड़गड़ कए गड़कए ।

होरीक हुड़दंग
हुड़हुड़ाकए हर्ष हुड़कए ॥



लाल कुमुदिनि



लाल कुमुदिनि कैद अछि
मुदा करैत खिलकारि
देलनि विधाता छोट जग
पसरब रोकैत आरि ।

पसरब रोकैत आरि
मुदा रोकत के मुस्कान
जौं मुस्की रहए ठोरपर
रूकए ने किन्नहुँ गान ।

रूकए ने किन्नहुँ गान
कतबो पाथर घेरए
जीति लेलक आनन्द
ककरो किआ ओ टेरए !



जोगिरा !



जोगिरा सररररररररररररररररररररर
हो भैया ताल मिलाकए ताल मिलाकए ताल मिलाकए
हो भैया धीरेऽऽ धीरेऽऽ धीरेऽऽ धीरेऽऽ
हो भैया थिरेऽऽ थिरेऽऽ थिरेऽऽ थिरेऽऽ
हो भैया पुलपुलकाए पुलपुलकाए पुलपुलकाए पुलपुलकाए पुलपुलकाए

१

जोगिरा सररररररररररररररररररररर
एक हाथमे काजू किसमिस
एक हाथ गुलाल .. हो हो एक हाथ गुलाल
एक हाथ गोरीया ठोरे
दोसर गाले गाल !
जोगिरा सररररररररररररररररररररर

२

गीता कहे तौँ कर्म कर
फलके चिन्ता छोड़
फल तोरा भेटतौ कहाँ
सौंसे कर्मक चोर !
जोगिरा सररररररररररररररररररररर

३

सुरसुर सुरके नोट हो भैया,
हो सुरसुर सुरके नोट
करिया खोंटके गड़मे माला,
साधु कपारैँ चोट !
जोगिरा सररररररररररररररररररररर

४

फूकि-फूकि क' दीप मिझोलहुँ
एकसर करब इजोत
हो भैया एकसर करब इजोत
एकहि झोंकमे टिरिरिरि फट हो
अन्हरे भागे न्योत !
जोगिरा सररररररररररररररररररररर

५

होली के छै रंग हो भैया
होली के छै रंग
भांग कनिके संग हो भैया
भांग कनिके संग
सरररररर चलए पिचकारी
गोरिया फूलिकए दंग !
जोगिरा सररररररररररररररररररररर

६

गोरीया मुस-मुस क' मुसकाए
छौंडबा देखू दंग
पोल खोलैअ सभक होलैया
पड़ले-पड़ले नंग
जोगिरा सररररररररररररररररररररर

७

सारि संगे सट सटकाबए
भौजी अबिते भंग
सारिक मुड़ी निचा लटकलै
भैया फुर्रऽऽऽऽ फुरंग !
जोगिरा सररररररररररररररररररररर

८

केकर कथी छै लाल हो भैया
केकर कथी छै लाल
केकर कथी धमाल हो भैया
आ केकर कथी काल !
हो भैया केकर कथी छै काल ?

जियाके जंजाल हो भैया
जियाके जंजाल ?
हो भैया जियाके जंजाल ?
गोरियाके गाल भैया लाले लाले माल !
जोगिरा सररररररररररररररररररररर

९

देश चलैअ चीनीसँ
भदेश चलाबए भात
चुटटी घोंघा चुस्की मारए
भोलबा भागे लात !
जोगिरा सररररररररररररररररररररर

१०

भोलबा सिखलक लभके कनखी
जेम्हरे देखए मारए
लभक गीत घूमि-घूमि क' भैया
अइ टोल ओइ टोल झारए
पकड़ा गेल ओ झुट्ठा !
तैसँ मुँहें पड़लै जुत्ता !
जोगिरा सररररररररररररररररररररर
हो भैया ताल मिलाकए ताल मिलाकए ताल मिलाकए
हो भैया धीरेऽऽ धीरेऽऽ धीरेऽऽ धीरेऽऽ
हो भैया थिरेऽऽ थिरेऽऽ थिरेऽऽ थिरेऽऽ
हो भैया पुलपुलकाए पुलपुलकाए पुलपुलकाए पुलपुलकाए पुलपुलकाए
जोगिरा सररररररररररररररररररररर



मसीह



विचारक जे जे बन्दा अछि,
ओसभ एहि गुण्डा लेल गन्दा अछि ।
जे लड़त-पड़त तकरे मेटाएब,
एहि मुण्डासभक एजेण्डा अछि ।।
अपने मुँहें अछि घोषित मसीह
लहू भुजब निजके धन्धा अछि ।
ई रटल रटाओल ढोंग मंत्र
पट-पट पटकारैत पण्डा अछि ।।
ई इजोत पूञ्जसँ भगैत तिमिर
गोड़ल किड़ाएल गुह हन्दा अछि ।
अपने कीनल माला पहिर
लोक ठगि फसओने फन्दा अछि ।



पेट



कहाँदोन, सभ किछु सन्हिआ जाइत छैक !
पेट काटिकए जमा कएल
धन-सम्पत्ति, गहना-गुड़िया
अप्पन, पैतृक, अपुतालीबला
सभ क्षणेमे बिला जाइत छैक !
एहि पेटमे की नइँ अँटत ?
पेटसँ एहन की जे बँचत ?!
तैयो कहियो अघा जाइत छैक,
कहियो ओहो धरमसँ डेरा जाइत छैक !
जौँ पड़ल अपाच्य
त मुँहसँ फेका जाइत छैक ।
आ जौँ अग्राह्य,
त पेट अपने ऐंठा जाइत छैक !!
पेटेसँ छथि बहुत नेहाल
आ पेटे कारणे बेसी बेहाल ।
सभ अँटा देने मरोड़ाइत छैक,
अपाच्य अग्राह्यँ भुसभुसाइत छैक ।
नहि भरने फेर कोन्हिआइत छैक ।
तैँ वा नहि जानि किए
पेट कहाँदोन पापी अछि !
कहाँदोन काल अछि !!



चुनरीमे दाग



चुनरीमे दाग
साँचे नइँ नुकाएत !
कहुना ने कहुना
देखाइये जाएत !!

जतए दागेक चुनरी
आ उएह जे डिजाइन छैक ?
मलेक होए दुनियाँ
त फेर कथी बिसाइन छैक ?
डेटिंग, प्लटिंग आ सेटिंगसँ चलैत देशमे
शासन, विद्रोह वा आन्दोलन
सभ किछु पाचकक अजवाइन छैक ?!

सुनह, हो बौरा !
दाग चुनरीक जौँ
साँचसँ भात कराबैत रहए,
गन्धक बोध जखन
सुगन्धसँ साक्षात धराबैत रहए,
चुनरीक दाग भ' जाइछ प्रियतम अप्पन
जौँ साँचे सत्यसँ आत्मसात कराबैत रहए !



हे भगवान !



हे भगवान !
यशुक यरूसलमक
तीर्थयात्रासँ आएलसभ
वचना शान्तिक पुजारी मुदा
चौबीस घन्टा हिंसाक घन्ट ठोकैत अछि,
मनसा कर्मणा द्रव्यक लारसँ दबल
कृपण-सङ्गीतक जाज ढनढनबैत अछि ।

आ गान्धीक घाटपर
गुलाब चढ़ओनिहार
आँखि घुमा-घुमाकए
हाथ जोड़निहारसभ
हरेक सत्याग्रहपर
नाक सिकोड़ैत अछि,
बाँसक सोंटल लाठी लए
चमड़ी उघेरि डेङअबैत अछि !
महत्ता ओढ़ने महानसभ
हाइगेटक मार्क्सक सारापर

फोटो शूट करैत
समाज परिवर्तनक मूलसँ जीब भिजबैत
फेर ओही सारामे गाड़ि सड़ाकए अबैत अछि ।
आ, मुँहमे निमुँहाक नारा गुलगुलअबैत
ओकरे रक्तसँ सत्ता फहरअबैत
ओकर ठढ़औटीक बांकी आधार डीहो
तरे-तर सुरंग खनि ढहअबैत अछि ।

मण्डेलाक रोबेन टापू
झरोखा, ओढ़ना आ बर्तनसभ
निहारैत रङ्गीन जमघटमे आ सलामी मारैत
धैर्य, त्याग आ प्रतिवद्धता कथा गाबएबला
आब संघर्षकेँ वगावत कहैत अछि
अप्पन नेतृत्व जौं नहि त
हरेक बिद्रोहकेँ अपराध मानैत अछि ।
मेटबैत जड़िसँ
ओकर कथा-उपकथा
प्रवाहब योग्य अस्तु जकाँ
अप्रवेश्य, अशुभ आ अगोचर ठानैत अछि !

अहिना ने मानैत अछि !
हे भगवान !!



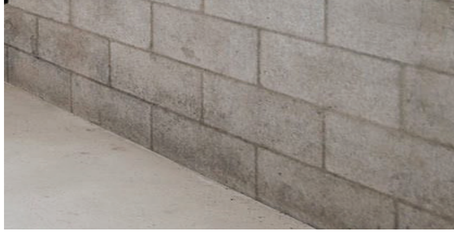
होरीपर



विचारपर जोड़ दैत
एजेन्डापर शोर दैत
जखन हम बजलहुँ,
आ अपन नेताजी दिश
कनखिआकए तकलहुँ
ओ हमर माथपर बजरलाह
दाढ़ी कुरिअबैत मंचपर पसरलाह
खिखिअएलाह
जे एकदिन खिचड़ीयोके अबैत छैक ।
हम कहलिअन्हि
विचारक त होइत छैक एक्के दिन होरी
कनेक ध्यानसँ सुनू ओ नेताजी मोरी
विचारक त एक्के दिन "होरी" होइत छैक
आओर सभदिन तँ अहींक खिचड़ी
लोक ढोईत छैक ॥



नेओक पाथर



नेओक ईंटा
गड़ल माटितर
भार उठोने ।

बिनु विषाद
निर्विकार मनें
ध्यान लगोने ।

सदा निरत
अटल पूर्ववत्
प्राण सुखोने ।

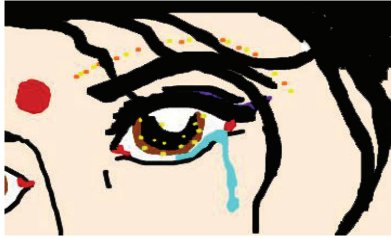
खसे ने केओ
धँसल सम्हरैत
जान लगोने ।

देखए लोक
उपरक गजुर
रंग पोतौने ।

देखएबला
सोझबैत आंगुर
सेहो दबौने !



छनकी



१.

करैअ खूब
बिरोध दहेजक
बेटी पैघ छै !

मुदा लाज छै
ससुर लग ..हीं ..हीं
नेने जे रहै !

गोंताएले ने
रहत ओ ओसभ
नेने दहेज !

काल्हि बेटीकेँ
कहत नेने रही
माफ करह ?!

अविवाहित
चलाउ अभियान
दहेज बिरोधी !

बौआक माय
किआ लै छी बदला
छोड़ू ने लोभ ?!

२



अपराजिता!
नील अछि शोकमे
अपमानसँ ?

खाली ओकरा
जोड़ल जाइत छै
जीतहारसँ ?!

प्रति आ अग्र
गमनसँ घेरल
जाइत छैक !

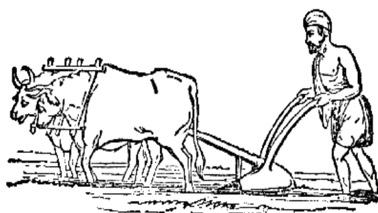
शक्तिक खाली
प्रतीक बनाकए
जोड़ल जाइत छै ?

'शक्ति'सँ साटि
तागतक पूजा ले
तोड़ल जाइत छै !

स्वतन्त्र गति
अस्तित्व, सपनाकेँ
तोड़ल जाइत छै !



बकए बएल बुझह रे बहुरा !



मनुखबा जहिएसँ जन्तुसँ मनुख भेल
बूधि कनोजरलैक
माटिमे अन्न जोरनाबक लूरि अएलैक
जन्तुसभकेँ नाथिकए जोतए लगलैक !

जकरे बलेँ उपजओलक
ओही अहिंसककेँ चूनि-चूनिकए
बुढ़ाइते ठहिआइते
धरतीक भार कमबए
सुरूजक इजोतेमे रेटए लगलैक ।
आ कहिओ जुआकए मोटाइते
सुअदगर बुट्टी गटकए
ढ़ोल नगारा पिटैत
परसादीसँ मस्तीमे झुमैत
छपकिकए देवताकेँ चढ़बए लगलैक ।



आ फेर,
मनुखबा मनुखेकेँ पकड़ि
जोतए लगलैक
पैनाक सट्टा कोर्रासँ
सोंटए लगलैक गोंतए लगलैक
ओकर पूरे जीवन घोंटए लगलैक !

आ कहांदोन भगवान
सर्वश्रेष्ठ अकिल दए
मनुखेके निचैनसँ गढ़ने छथिन्ह ?!
एकरे मनसँ अशीषने छथिन्ह !!

बकए बएल बुझह रे बहुरा !



सीताके भूमिमे ... आह !



सीताके भूमिमे
फेक देलजाइत अछि सीता !
जनमिते जाढ़मे ठिठुरए लेल
कहियो धीपल दुपहरियामे
तपल धरतीपर जड़ए लेल
कात-करोट झार-झाँखरमे
झोंकि देल जाइत अछि सीता !

कहियो जानकी नगरमे
कहियो अंगराजसर बीच शहरमे
भसा देलजाइत अछि सीता !!
सीते भसबैत अछि
रामे पठबैत अछि
पवित्र चानन पुण्डमे
जनके सिखबैत अछि
वशिष्ठ आ बाल्मिकी

निर्लज्ज एहन लोकलाज
नइँ जानि किया पढ़बैत अछि !
आ कि सीताक मुखौटामे
रमलीला जकाँ तंग मंचपर
रूप बदलने दैतसभ
खेल मचओने अछि ?!
सीता आ रामकेँ
जनक, बाल्मिकी आ वशिष्ठकेँ
बन्न क' काल कोठरीमे
ई धुमगज्जर मचओने अछि ?!!
कोइ उठाबह !
वाण चढ़ाबह !!
शिव धनुषपर
मनुखक भेषमे
चोंगामे नुकाएल छीपल दैतपर !!!
आह ! आह !! आह !!!



प्रणाम !



ठेहुनैत-अहुँराइत
दौगैत-पराइत
दल-ढेपा
लार-पोआर
जंगल-झार
पर्ती-पराँत
निक-बेजाय
नरम-गरम
सिनेह-खीस
सभ पसरि जाइत अछि ।
जखन अपन जेठ-छोटक
संग आ स्मृतिमे
लोक लोटाइत अछि !
नहि जानि तखन की कथी ले
कतक कोन कारी सिलेटपर
की-की लिखाइत अछि !!
धन्य जननी, जनक
जे जी-क्षण देलनि
आ ओ सभ गुरूजन
जे जीअ सिखबैत जाइत अछि !
प्रणाम !!





संग्रहक कोनो कवितामे नैराश्यक उदास राग कत्तहु ने ध्वनित होइत अछि। जीवनक आस्थामय अनुभूतिसँ अनुप्राणित कवि लालक कविता जिजीविषाक कविता भेलाक कारणेँ ताहिमे अभिव्यक्त वैयक्तिक अन्तर्वेदना सेहो संघर्षक उत्प्रेरक बनि गेल अछि। कविक अन्तर्वेदना पंगुताक जन्म नहि दैछ, मुक्तिक हेतु श्लथ जीवनकेँ ऊर्जस्वित करैत अछि। अन्तर्वेदनासँ पंगुता नहि पुंसत्व जनमैत अछि। लक्ष्यपथमे बहैत अश्रु, रक्त, स्वेद प्राणवत् गतिशीलताक परिचय बनि जाइत अछि। छल, स्वार्थ, हिंसा, विद्रूपता आ सौन्दर्य, शान्ति, उत्साह, उच्छलता, हौसलासभ अनुभूतिकेँ वाणी दैत कवि जीवनके सम्पूर्णतामे स्वीकार करैत छथि, मुदा आधुनिक विज्ञान आ तकनीकक एहि युगमे कवि बृषेश चन्द्र लाल धरातलीय यथार्थक वैज्ञानिक परीक्षण करै छथि आ उपलब्ध सत्यकेँ विज्ञान-सम्मत विम्वक माध्यमे प्रस्तुत करैत छथि।

डा. राजेन्द्र प्रसाद विमल

बहुत अखियासिक' देखने, खूब बिहियाक' परेखने, डिठिया-ठिकियाक' निङहारने, बूझ'-सूझमे अबैछ जे वृषेशचन्द्र लालक समस्त रचनागत संसारक आयाम बहुत विस्तृत अछि आ एकर परिधि, परिदृश्य बहुत व्यापक अछि। ओहि परिदृश्यगत व्याप्तिके निमने-नाहित अवगाहने, नीकस' अध्ययन कएने, ठीकस' मूल्यांकन कएने, देख'मे अबैछ जे ई कवि सृजनात्मक मूल्यवोधक विशेष आग्रही आ लोकनिष्ठाप्रति सेहो किछु बेसिए संवेदनशील छथि। जीवन जगत्क अवलोकन ई बहुत सूक्ष्मताक संग कएने छथि सएह नहि, हिनक अभिव्यक्ति आवाज-दवावके रूपमे, रूपान्तरणकारी आन्दोलन आ परिवर्त्तनक पक्षमे, सोझे डिठे लोक-समाजसङे, अटल-डटल, ठठल ठाढ छन्हि।

आइकाल्हि राजनीतिक आवाज आ दवाव अधिकतर झौहरा हल्ला करैत, देखाइ दैत अछि। ओतहि हिनक रचनागत आवाज आ सृजनात्मक दवाव नव संरचनावादी, लोकसंवेगित आ रूपान्तरणक पक्षधर रहल देखाइ दैत अछि।

परमेश्वर कापडि